साप्ताहिक
शांति मिशन
नई दिल्ली
वर्ष-28 अंक- 32 08 - 14 अगस्त 2021 पृष्ठ 12

अन्दर पढ़िए
ख़तरें में है मानव जाति समय कम है पृष्ठ-6
संकट में बचपन-उपाय क्या है? पृष्ठ-7

जनसंख्या वृद्धि के नाम पर राजनीति

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार का नया पैंतरा

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले लाए गए जनसंख्या नियंत्रण नीति के प्रस्ताव से राजनीतिक दलों को लाभ हो न हो, ग़रीबों-वंचितों के लिए यह नुकसानदायक है।

अगर आपके दो से अधिक बच्चे हुए तो सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। सरकारी नौकरी में हैं तो प्रमोशन नहीं मिलेगी। स्थानीय निकाय चुनाव नहीं लड़ सकेंगे, सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिलेगा....और भी बहुत कुछ। लेकिन आप विधायक या सांसद बन सकते हैं, बच्चे चाहे जितने हों। उत्तर प्रदेश की जनसंख्या नियंत्रण नीति के मसौदे का मज़मून कुछ ऐसा ही है। विधानसभा चुनाव के करीब आठ माह पहले लाए गए बिल के इस मसौदे ने राजनीतिक सरगर्मियाँ बढ़ा दी है। कई दूसरे राज्यों में भी ऐसी नीति की मांग उठने लगी है। राज्य विधि आयोग के इस ड्राफ्ट बिल - उत्तर प्रदेश जनसंख्या (नियंत्रण, स्थायीकरण एवं कल्याण) विधेयक, 2021 - के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर जनसंख्या नीति 2021-2030 की घोषणा की। राज्य सरकार 2026 तक प्रजनन दर 2.1 और 2030 तक 1.9 पर लाना चाहती है, जो अभी 2.7 है। नीति में लोगों को गर्भनिरोधक और सुरक्षित गर्भपात का तरीक़ा उपलब्ध कराने, मातृ शिशु मृत्यु दर घटाने और बच्चों को उचित शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं और पोषण उपलब्ध कराने की बात कही गई है। जहां प्रजनन दर ज़्यादा है वहां जागरुकता कार्यक्रम चलाए जाएंगे।

भारत की 138 करोड़ की आबादी में उत्तर प्रदेश का योगदान 24 करोड़ हैं अगर यह अलग देश होता, तो दुनिया का पांचवां सर्वाधिक आबादी वाला देश होता। यहां आबादी का घनत्व तो राष्ट्रीय औसत से दोगुना है, लेकिन प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से आधा भी नहीं। सिर्फ इन आंकड़ों को देखें तो जनसंख्या नियंत्रण नीति की ज़रूरत महसूस होती है, लेकिन प्रश्न तरीके पर है।

संयुक्त राष्ट्र की 2019 की रिपोर्ट के अनुसार भारत की आबादी 2027 में चीन को पार कर जाएगी। फिर भी, यहां राष्ट्रीय स्तर पर दो बच्चे की नीति नहीं अपनाई गई। पिछले वर्ष दिसंबर में केन्द्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में कहा था कि वह ऐसी नीति लागू नहीं करेगी। अब भाजपा के कई सांसद और कांग्रेस के अभिषेक मनु सिंघवी ने मानसून सत्र में प्राइवेट मेंबर बिल लाने की बात कही है।

देश में जनसंख्या नियंत्रण की पहल ऐसे समय में हो रही है जब प्रजनन दर में पहले ही गिरावट का रुख़ है। प्रजनन दर (टोटल फर्टिलिटी रेट) का अर्थ है कि एक महिला अपने जीवन में कितने बच्चों को जनम देती है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफ एचएस) के अब तक सर्वेक्षणों के अनुसार प्रजनन दर लगातार घट रही है। चौथे सर्वेक्षण (2015-16) में यह 2.18 थी। इसके 2030 में 1.8 गिर जाने का अनुमान है। प्रजनन दर 2.1 को रिप्लेसमेंट लेवल माना जाता है, यानि इस दर पर आबादी स्थिर हो जाएगी। गौर करने वाली बात है कि यह गिरावट बिना किसी दंडात्मक प्रावधान के आई है। सरकार ने 2017 की 'यूथ इन इंडिया' रिपोर्ट में स्वीकार किया है कि शहरों में प्रजनन दर दो बच्चे प्रति महिला से कम रह गई हैं भारत में 1950 के दशक में प्रजनन दर 5.9 थी, यह 1971 में भी 5.2 थी।

उत्तर प्रदेश में प्रजननन दर दूसरे सर्वेक्षण (1998-99) में 4.06 और तीसरे (2005-06) में 3.82 थी, जो चौथे सर्वेक्षण में 2.74 रह गई। पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया की एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर पूनम मुतरेजा का कहना है "यह सच है कि उत्तर प्रदेश सबसे अधिक प्रजनन दर वाले राज्यों में है। चौथे सर्वेक्षण में बिहार 3.4 के साथ शीर्ष पर था। लेकिन प्रजनन दर में सबसे का 1.1 की गिरावट उत्तर प्रदेश में ही दिखा है।"

उत्तर प्रदेश ने प्रजनन दर को रिप्लेसमेंट लेवल (2.1) के नीचे लाने का लक्ष्य रखा है। मुतरेजा के अनुसार, "इसके विपरीत नतीजे हो सकते हैं। जैसे श्रम बल की कमी। दीर्घ काल में बुज़ुर्ग आबादी की समस्या भी जाएगी। आज सिक्किम वृद्ध होती आबादी और घटते श्रम बल की चुनौती का सामना कर रहा है। वहां प्रजनन दर रिप्लेसमेंट लेवल से नीचे है।" मुतरेजा का मानना है कि दंडात्मक नीति दीर्घकाल में नुकसानदायक होती है। 2000 में चीन की आबादी में 15 से 59 वर्ष की आयु के लोग 22.9 प्रतिशत थी, जो 2020 में घटकर 9.8 प्रतिशत रह गए। चीन की आबादी तेजी से वृद्ध हो रही है। वहो 2010 में 13.26 प्रतिशत लोग 60 वर्ष या इससे अधिक आयु के थे, अब वे 18.70 प्रतिशत हो गए हैं। चीन ने इस वर्ष 31 मई को तीन बच्चों की नीति की घोषणा की। कांग्रेस के सिंघवी भले ही राज्यसभा में प्राइवेट मेंबल बिल पेश करने वाले हों, उत्तर प्रदेश में पार्टी के ही वरिष्ठ नेता सलमान खुर्शिद ऐसी नीति की आलोचना करते हैं। उन्होंने कहा, "जनसंख्या नियंत्रण बिल लागू करने से पहले सरकार के नेता और मंत्री बताएं कि उनके कितने बच्चे हैं।" दो से अधिक बच्चों वाले माता-पिता को सरकारी नौकरी न देने की नीति पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेष बघेल ने प्रश्न किया, जिनके दो बच्चे हैं क्या भाजपा उन्हें सरकारी नौकरी की गारंटी देती है? बिहार में सत्तारुढ़ गठबंधन नेताओं के सुर अलग हैं। मुख्यमंत्री और जदयू नेता नीतीश कुमार के अनुसार क़ानून से कुछ नहीं होगा, शिक्षा से जनसंख्या नियंत्रण संभव है। लेकिन बिहार भाजपा अध्यक्ष और पश्चिम चंपारण से सांसद संजय जायवाल का मानना है कि बिहार को भी उत्तर प्रदेश जैसी नीति अपनानी चाहिए। भाजपा के सहयोगी संगठन विश्व हिन्दू परिषद ने नीति का विरोध किया है। इसके कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने उत्तर प्रदेश विधि आयोग को लिखा कि सिर्फ एक बच्चे वाले माता पिता को इंसेंटिव देने की नीति से बचना चाहिए, क्योंकि इससे राज्य की डेमोग्राफी बिगड़ेगी।

दो बच्चों की नीति कई राज्यों में लागू है, लेकिन वह निकाय चुनावों तक सीमित है। राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तेलंगाना, कर्नाटक, ओडिशा और हरियाणा में दो से अधिक बच्चे वालों के स्थानीय चुनाव लड़ने पर रोक है। राजस्थान में ऐसे लोग सरकारी नौकरी के लिए आवेदन नहीं कर सकते। मध्य प्रदेश में 2001 से और महाराष्ट्र में 2005 से ऐसा नियम लागू है।

असम में भी दो से अधिक बच्चे वाले न सरकारी नौकरी के लिए आवेदन कर सकते हैं न निकाय चुनाव लड़ सकते हैं। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सर्मा के अनुसार अब सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए भी दो बच्चे

बाकी पेज 11 पर

दो से अधिक बच्चे होने पर पहली बार दंडात्मक प्रावधान

उत्तर प्रदेश सरकार के प्रस्ताव के अनुसार सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी, नौकरी में है तो प्रमोशन नहीं मिलेगा, जो पहले से सरकारी नौकरी में हैं उन पर यह नियम लागू नहीं होगा। सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिलेगा, क़ानून लागू होते समय जिनके दो से अधिक बच्चे हैं वे इसके दायरे में नहीं आयेंगे। स्थानीय निकाय चुनाव नहीं लड़ सकेंगे, जो पहले से निकाय के सदस्य हैं उन पर यह नियम लागू नहीं होगा। दो से अधिक बच्चे वाले निकाय सदस्य या सरकारी कर्मचारी शपथ पत्र देंगे कि वे और बच्चे नहीं करेंगे। उल्लंघन करने पर सदस्यता या नौकरी चली जाएगी। **इन्हें छूट** :- दूसरी प्रेग्नेंसी में जुड़वा बच्चे होने, दो बच्चे के बाद तीसरा बच्चा गोद लेने, पहला और या दूसरा बच्चा विकलांग होने के बाद तीसरा बच्चा होने, एक या दोनों बच्चे की मौत के बाद तीसरा बच्चा करने पर नियम का उल्लंघन नहीं माना जाएगा।

भारत अफग़ानिस्तान की हक़ीकत स्वीकारे

अफग़ानिस्तान में कौन जीत, कौन हारा? तालिबान बेशक जीता और अमेरिका और उसके साथी हारे। लेकिन पाकिस्तान का क्या? पिछले दो दशकों में तालिबान ने यह साबित कर ही दिश है कि वह अपने बिग ब्रदर से ज़्यादा स्मार्ट हैं उसने अपनी रणनीतिक गहराई हासिल करने के लिए पाकिस्तान का इस्तेमाल किया है।

शेखर गुप्ता

नई दिल्ली और काबुल के बीच गतिविधिं तेज़ हो गई हैं। तालिबान आगे बढ़ रहा हैं इसका भारत पर क्या असर होगा? क्या बाइडेन द्वारा अफग़ानिस्तान से क़दम वापस खींचने पर भारत को निराश होना चाहिए? या नए घटनाक्रम में उसे लिए अवसर छिपे हैं? क्या तालिबान से तनावपूर्ण संबंध निश्चित हैं? क्या यह मान कर चलें कि वे पाकिस्तान के इशारे पर चलने वाले पेशेवर सिपाही बने रहेंगे। क्या तालिबान भारत का दुश्मन है, उससे युद्ध लड़ने जा रहा है या हमारे ख़िलाफ़ पाकिस्तान का साथ देने जा रहा है? क्या तालिबान भारत को एक इस्लामी मुल्क में तब्दील कर पाएंगे? तालिबानी दकियानूसी, बर्बर, महिला विरोधी, गैरभरोसेमंद या ओर बुरे हो सकते हैं, लेकिन मूर्ख या आत्मघाती नहीं हैं। वरना वे दो दशकों तक लड़कर अमेरिका को परास्त न कर पाते।

भारत के पश्चिम क्षेत्र को जो रणनीतिक नज़र पाकिस्तानी चश्मे से देखती है उसका एक उलटा पहलू है। हम इस बात से परेशान हो जाते हैं कि अमेरिका के वापस लौटने से पाकिस्तान को रणनीतिक गहराई हो गई हैं इस तरह का मुग़ालता रावलपिंडी में जनरल हेडक्वार्टर में बैइ़े बुद्धिमान ही पाल सकते हैं। इन लोगों ने ही 1986-87 के बाद यह सपना देखना शुरू किया। लेकिन आज दुनिया बदल चुकी है और इसके साथ रणनीतिक तथा सामरिक तस्वीर भी बदल चुकी है। परमाणु हथियार आ चुके हैं। अगर कुछ पाकिस्तानी जनरल अभी भी यह ख़्वाब देख रहे हों कि वे हिंदकुश होते हुए अफग़ानिस्तान पहुंच सकते हैं य वहां कोई रणनीतिक जमावड़ा कर सकते हैं, तो वे निश्चित ही बहुत भोले हैं।

बाइडेन अफग़ानिस्तान में जीत का खोखला दावा कर रहे हैं कि 'हमने लक्ष्य हासिल कर लिया'। लेकिन बाइडेन ने यह अपमानजनक हक़ीक़त कबूल ली है जिसे कबूल करने को बुश तैयार नहीं है। वह यह है कि अफग़ानिस्तान रॉक बैंड ईगल्स का कोई होटल कैलिफोर्निया नहीं है जहां आप मनमर्ज़ी से आ सकते हैं और बाहर आ सकते हैं। अमेरिका एक शून्य छोड़कर गया हैं तालिबान हर दिन कब्ज़ा बढ़ा रहे हैं। देखना यह है कि पाकिस्तान का क्या होता है। अगर लड़ाई लंबी चली तो फौरन फायदे हासिल करने की उसकी उम्मीदें ख़त्म हो जाएंगी। युद्ध से त्रस्त शरणार्थी, पैदल ही डूरंड रेखा पार करने लगेंगे। तालिबान अगर योद्धाओं से सौदे करके इस लड़ाई को जल्दी निपटा देता है तब भी वे पाकिस्तान को कितना नियंत्रण सौंपेंगे? आप कह सकते हैं कि वे चीन और पाकिस्तान के बीच की चक्की में फंस जाएंगे। लेकिन अफग़ानिस्तान का इतिहास ऐसा नहीं रहा है। वह इस क्षेत्र में दिलचस्पी रखने वाली ईरान और रूस जैसी ताक़तों से सुलह कर सकता है।

हक़ीक़त यह है कि भारत तालिबान से बात कर रहा है, पर इसका ढोल नहीं पीट रहा। इसकी कोई संभावना नहीं है ग़नी की सरकार तालिबान को युद्ध में हरा पाएगी। भारत के लिए सबसे अच्छी बात यही होगी कि बातचीत से कोई यथार्थपरक समझौता हो जाए जिससे शांति बहाल हो और सत्ता का बंटवारा हो। भारत वहां कुछ वजन तो रखता है लेकिन इतना नहीं कि वह सैन्य टकराव को प्रभावित कर सके। भूगोल और भू राजनीति इसमें आड़े आती है। रणनीतिक रूप से यह सबसे व्यावहारिक रास्ता है। तालिबान को भारत से लड़ने की कोई ज़रूरत नहीं है। वे हमारे ख़िलाफ़ पाकिस्तान का युद्ध तो नहीं ही लड़ेंगे।

भारत को इस रास्ते पर चलना है तो मोदी सरकार को भी चश्मा हटाकर देखना पड़ेगा कि किसी राजनीति ताक़त को सिर्फ इसलिए दुश्मन नहीं मान सकते कि वह इस्लामी कट्टरपंथी है। हमें मालूम है कि यह उसकी चुनावी रणनीति का केन्द्रीय मुद्दा है। लेकिन भारत के इर्दगिर्द दुनिया बदल गई है।

बाक़ी पेज 11 पर

दिल्ली में कब और कैसे खुलें स्कूल सरकार ने मांगें सुझाव

दिल्ली के उपमुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री मनीष सिसौदिया ने स्कूल कॉलेज खोलने पर अभिभावकों, प्रिंसिपल्स, शिक्षकों और छात्रों से सुझाव मांगे हैं। इसके लिए दिल्ली सरकार ने ई-मेल एड्रेस delhischool21@gmail com जारी किया हैं। दिल्ली के स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों, उनके अभिभावकों, शिक्षक सरकार को बताएंगे कि अब स्कूल कैसे खोले जा सकते हैं। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि शैक्षणिक संस्थानों को दोबारा खोलने से पहले अभिभावकों, शिक्षकों के सुझाव ज़रूरी है और इन सुझावों के आधार पर सरकार फैसला लेगी। शैक्षणिक संस्थानों को खोले जाने के लिए सुझाव मांगने के बाद लोगों को ज़बरदस्त रिस्पांस मिला है। शुरूआती 3 घंटे के अंदर ही करीब 5000 लोगों ने ई-मेल के माध्यम से अपने सुझाव सरकार को भेजे हैं।

उपमुख्यमंत्री ने प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों में 19 जुलाई से 31 जुलाई तक चली विशेष पीटीएम के दौरान कई स्कूलों का दौरा कर अभिभावकों और शिक्षकों से मिलकर बातचीत की। अभिभावक और शिक्षक दोनों यह चाहते हैं कि स्कूल खोले जाएं, लेकिन उनके मन में बच्चों की सुरक्षा को लेकर डर भी हैं कॉलेज बंद होने के कारण युवाओं की भी कॉलेज लाइफ घर के कमरे तक सिमट गई है। कॉलेज जाने वाले युवाओं का सपना होता है कि वे कॉलेज में पढ़ेंगे लेकिन महामारी के कारण उनका कॉलेज कैंपस घर के एक कमरे तक ही सीमित होकर रह गया है। युवा भी इस बात को जानना चाहते हैं कि उनके कॉलेज कब और कैसे खुलेंगे? उन्होंने कहा कि स्कूल और कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है, लेकिन उनकी सुरक्षा के लिए ही सरकार को शैक्षणिक संस्थानों को बंद करना पड़ा था।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि अब आसपास के कई राज्यों में स्कूल खुल चुके हैं या खुल रहे हैं। कई जगह जुलाई में ही स्कूल खुल गए हैं और कई जगह स्कूल खुलने जा रहे हैं। दिल्ली में अब कोरोना की स्थिति नियंत्रण में है। दिल्ली में रोज़ाना 70 से 75 हज़ार कोरोना टेस्ट हो रहे हैं और 40-60 कोरोना पॉजिटिव लोग मिल रहे हैं। ऐसे में सरकार शैक्षणिक संस्थानों को खोलने को लेकर कोई फैसला ले, उससे पहले अभिभावकों, शिक्षकों और छात्रों की राय भी सरकार जानना चाहती है कि शैक्षणिक संस्थानों को कब से और कैसे खोले। सुझाव पर delhischool21@gmail com ई-मेल के द्वारा भेज सकते हैं। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि सुझावों के आने बाद सरकार फैसला लेगी कि शैक्षणिक संस्थानों को कब और कैसे खोला जाए। उन्होंने बताया कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों में 19 जुलाई से 31 जुलाई तक चली विशेष पीटीएम में 5 लाख से ज़्यादा अभिभावकों ने स्कूल जाकर अपने बच्चों की पढ़ाई को लेकर टीचर्स से बातचीत की और सुझाव सांझा किए हैं। सरकार इन सुझावों और ई-मेल सुझावों को परख कर ही कोई फैसला करेगी कि स्कूल कब कैसे खोले जाएं।□□

दिल्ली : कोरोना काल में 791 औरतें हुईं बेवा

कोरोना काल में राजधानी में 791 महिलाओं की मांग उजड़ गई यानि उन्होंने अपने जीवनसाथी को खो दिया। इनमें 774 महिलाएं ऐसी हैं जिनकी संतानें हैं। ये आंकड़े दिल्ली महिला आयोग द्वारा जारी सोशल सर्वे रिपोर्ट में सामने आए हैं आयोग के प्रवक्ता राहुल ताहिल्यानी के मुताबिक, आयोग ने यह रिपोर्ट महिला पंचायतों के ज़रिये तैयार की हैं दिल्ली में जगह-जगह घूमर ऐसी महिलाओं को चिह्नित किया गया जो कोरोना महामारी के कारण विधवा हुई हैं। चिह्नित की गई 791 महिलाओं में 360 महिलाओं के तीन से पांच बच्चे हैं। वहीं, 30 महिलाओं के पांच से अधिक बच्चे हैं। कुल 734 महिलाएं ऐसी हैं जिनकी आयु 18-60 वर्ष के बीच हैं। अन्य महिलाएं सीनियर सिटीजन हैं। आयोग के मुताबिक 18-35 वर्ष की आयु के बीच केवल 191 महिलाएं हैं। सर्वे में ये भी देखा गया कि चिह्नित की गईं महिलाओं में से 597 ने अब तक टीकाकरण भी नहीं करवाया है। आयोग के मुताबिक इनका टीकाकरण बेहद ज़रूरी है। आयोग ने सरकार को ज़िलाधिकारियों को निर्देश जारी कर इनका जल्द टीकाकरण कराने की सलाह दी है। दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल ने ये सोशल सर्वे रिपोर्ट महिला एवं बाल विकास मंत्रालय और सामाजिक कल्याण विभाग को भेजी है। स्वाति ने कहा कि कोरोना महामारी की दूसरी लहर में बहुत से परिवारों ने अपनों को खोया। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ऐसे सभी परिवारों को सहायता देने के लिए मुख्यमंत्री कोविड-19 परिवार आर्थिक सहायता योजना की घोषणा की हैं। ऐसे में दिल्ली सरकार की ये योजना इन सब महिलाओं की सहायता करने में बेहद लाभदायक साबित होगी। आयोग द्वारा चिह्नित महिलाओं का सोशल सर्वे इन महिलाओं के पुनर्वास में काम आएगा व सरकार की योजना इन महिलाओं तक पहुंचाने में भी मदद करेगा। आयोग ऐसी और विधवाओं को ढूंढने की प्रक्रिया में है जिन्होंने अपने पति को कोरोना महामारी के दौरान खोया है।

संपादकीय

शांति मिशन

राजनीति में अपराधियों की बढ़ती संख्या चिंताजनक

संसद आज हल्ला-गुल्ला, शोर शराबा, अव्यवस्था, बहिर्गमन, हाथापाई, माइक, कुर्सी टेबल तोड़ने की प्रतीक बन गई हैं कुल मिलाकर यह तमाशा बन गई है। इसमें कौन सी बड़ी बात है और संसद के मानसून सत्र के पहले सप्ताह में कुछ भी कार्य न हो पाने या तृणमूल के राज्यसभा सांसद द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री से कागज छीनकर फाड़ने पर अफसोस क्यों व्यक्त करें? उसके बाद तृणमूल कांग्रेस सांसद और आवास मंत्री पूरी के बीच तीखी नोक झोंक हुई, जिसके बाद मार्शल को तृणमूल सांसद को सदन से बाहर ले जाना पड़ा।

किन्तु यह कहानी यहीं समाप्त नहीं होती, पिछले दिनों उच्चतम न्यायालय ने इस बात पर अफसोस व्यक्त किया कि राजनीति में दाग़ी व्यक्ति अभी भी विद्यमान हैं हालांकि उसने पिछले वर्ष बिहार विधानसभा चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों को आदेश दिया था कि वे आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों को टिकट न दें। उम्मीदवार की योग्यता, उपलब्धियों, गुणों, उसके विरुद्ध आपराधिक मामलों के बारे में जानकारी प्रकाशित कराएं।

राजनीतिक दलों द्वारा बिहार विधान सभा के दौरान उम्मीदवारों की आपराधिक पृष्ठभूमि की घोषणा न किए जाने के विरुद्ध एक अवमानना याचिका पर सुनवाई करते हुए उच्चतम न्यायालय ने कहा, ''यहां विविधता में एकता है, हम विधायिका से कह रहे हैं कि वे ऐसे उम्मीदवारों के विरुद्ध कार्रवाई करें, जिनके विरुद्ध आरोप तय किए जा चुके हैं, किन्तु किसी भी पार्टी द्वारा अपराधियों को राजनीति में प्रवेश करने या चुनाव में खड़े होने से रोकने के लिए कुछ भी नहीं किया गया।

दाग़ी नेताओं या राजनीति को स्वच्छ करने ऐसी कौन सी बड़ी बात है कि हमारे नेता इससे बचते रहे और विशेषकर तब, जब वे सफेदी की चमकार वाली राजनीति की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और इस संबंध में अपने सच्चे प्रयासों को प्रमाणित करने के लिए किसी भी सीमा तक चले जाते हैं। किन्तु अब उनके शब्दों को व्यवहार में लाने की बात आती है तो वे अनजान बन जाते हैं, आंखें बंद कर लेते हैं।

हैरानी की बात यह है कि पिछले वर्ष सितंबर की स्थिति के अनुसार 22 राज्यों में 2,556 सांसदों और विधायकों के विरुद्ध आपराधिक मामले थे, यदि इनमें पूर्व विधायकों को भी जोड़ दिया जाए तो इनकी संख्या 4442 है। वर्तमान में लोकसभा के 53 सदस्यों में से 233 अर्थात् 43 प्रतिशत सदस्यों के विरुद्ध आपराधिक मामले लंबित हैं, जिनमें से 30 प्रतिशत के विरुद्ध गंभीर मामले हैं, 10 सांसद सज़ायाफ्ता हैं, 11 मामले हत्या, 20 मामले हत्या के प्रयास और 19 मामले महिलाओं के अपहरण के हैं। इनमें से भाजपा के 301 सदस्यों में से 116 अर्थात् 39 प्रतिशत, कांग्रेस के 51 में से 10 अर्थात् 43 प्रतिशत, तृणमूल के 22 में से 9 अर्थात् 41 प्रतिशत, जद (यू.) के 16 में से 13 अर्थात् 81 प्रतिशत सदस्यों के विरुद्ध आपराधिक मामले हैं।

एक कांग्रेसी सांसद ने अपने विरुद्ध 204 मामलों की घोषणा की है, जिनमें ग़ैर इरादतन हत्या का प्रयास, जबरन किसी के घर में घुसना, डकैती, आपराधिक धमकी आदि मामले शामिल हैं। ऐसे सदस्यों की संख्या 2004 में 24 प्रतिशत, 2009 में 30 प्रतिशत और 2014 में 34 प्रतिशत थी। राज्यों के बारे में कम ही कहा जाए तो अच्छा है। उत्तर प्रदेश में 401 विधायकों में से 143 अर्थात् 36 प्रतिशत, बिहार में 243 में से 142 अर्थात् 58 प्रतिशत विधायकों के विरुद्ध आपराधिक मामले चल रहे हैं, जिनमें से 70 विधायकों अर्थात् 49 प्रतिशत के विरुद्ध आरोप पत्र दायर किए जा चुके हैं।

वस्तुतः उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक ऐसे विधायक हैं जिनके विरुद्ध आपराधिक मामले लंबित हैं। राज्य में विधायकों के विरुद्ध 1217 मामले लंबित हैं। 446 मामले वर्तमान विधायकों के विरुद्ध हैं। भाजपा के 37 प्रतिशत विधायकों के विरुद्ध आपराधिक मामले लंबित हैं। 35 वर्तमान और 81 पूर्व विधायकों पर आजीवन कारावास की सज़ा से दंडनीय जघन्य मामले लंबित है। बिहार में 521 वर्तमान और पूर्व विधायकों के विरुद्ध आरोप पत्र दायर किए जा चुके हैं, जिनमें से 43 के विरुद्ध आजीवन कारावास की सज़ा जैसे दंडनीय मामले लंबित हैं।

केरल में 333 मामले, ओडिशा में 331, महाराष्ट्र में 330 और तमिलनाडू में 324 मामले लंबित हैं। प्रश्न उठता है कि यदि ऐसे विधायक हों तो हम उनसे देश से अपराध उन्मूलन की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं। ऐसे वातावरण में जहां पर सत्ता का तात्पर्य संख्या खेल बन गया है, राजनीतिक दल खुलेआम माफिया डॉन और आपराधियों को उम्मीदवार बनाते हैं क्योंकि वे अपने बाहुबल से मत प्राप्त कर लेते हैं और अवेध पैसे का चुनाव में प्रयोग कर विजयी बन जाते हैं, जबकि स्वच्छ छवि वाला उम्मीदवार चुनाव हार जाता है। सांसद या विधायक का टैग उन्हें पुलिस मुठभेड़ और प्रतिद्वंद्वियों से बचाने का कार्य करता है।

त्रासदी यह है कि हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली को अपराधियों ने हड़प लिया है जिसके चलते हमारे देश में आज राजनीति में अच्छे लोगों की कमी है। समय आ गया है कि संसद लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 में संशोधन पर विचार करे और ऐसा कानून बनाए जिससे उस उम्मीदवार को चुनाव लड़ने की अनुमति न मिले जिसके विरुद्ध गंभीर अपराधों में न्यायालय द्वारा आरोप निर्धारित किए जा चुके हैं। इसके साथ ही हमें मतदाताओं को भी जागरुक करना होगा तथा राजनीति के अपराधीकरण के लिए सही स्थितियां पैदा कर लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ाना होगा अन्यथा हमें इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि आज के अपराधी किंग मेकर कल के किंग बन जाएंगे।

तारीख़े इस्लाम

ख़ुतबाते सीरते तैयिबा

मुफ़्ती मुहम्मद सलमान मंसूरपुरी क़िस्त- 84

नबी-ए-अकरम अ़लैहिस्सलाम को पता चला कि इस तरह से कुफ़्फ़ारे मक्का आ रहे हैं और क़रीब पहुंच गए हैं, तो आप ने सहाबा को जमा कर के मशवरा लिया कि हमें क्या करना चाहिये? तो सहाबा में एक जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि अल्लाहु अ़न्हु हैं, पहले वह ईसाई थे, मज़हबे हक़ की तलाश में बहुत से राहिबों के पास रहे, बिल आख़िर मदीना मुनव्वरा में इसी लिए आए थे, ताकि आख़री पैग़म्बर के ऊपर ईमान ला सकें, और बड़ी लम्बी उम्र (तक़रीबन 250 साल की) पाई, बड़े तज्रिबकार और मुल्के फ़ारस के रहने वाले थे, पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम को भी उन से बहुत ही तअ़ल्लुक़ था, और उनकी क़द्र फ़रमाते थे।

तो उस मशवरे में यह बात आई कि इतना बड़ा लश्कर आ रहा है, कैसे मुक़ाबला किया जाए? तो हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हमारे यहाँ जब ऐसी सूरत पेश आती है, तो हम अपने शहर के इर्द गिर्द ख़ंदक़ खोद देते हैं, ताकि लश्कर ख़ंदक़ को पार न कर सके, तो यह राय पसंद की गई, और फ़ौरी तौर पर मदीना मुनव्वरा में दाख़िले का जो रास्ता था, उसकी पैमाइश कर के हर हिस्से के लिए सहाबा की एक एक टुकड़ी बना दी गई कि लश्कर के आने से पहले इतने दिन के अंदर अंदर यह ख़न्दक़ तैयार हो जानी चाहिये, चुनान्चे तमाम सहाबा लग गए, और ख़ुद पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम भी उस में शरीक रहे। एक मौक़ा ऐसा आया कि एक चटान किसी से टूट नहीं रही थी, नबी-ए-अकरम अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और आप ने कुदाल मारी, तीन मर्तबा कुदाल मारी तो उस से चिंगारी सी निकली, तो आप ने कभी फ़रमाया कि क़ैसर के ख़ज़ाने दिखलाये गए, कभी फ़रमाया कि किसरा के ख़ज़ाने दिखलाये गए, गोया आप ने पेशीनगोई फ़रमा दी कि अल्लाह तआ़ला उन तमाम हुकूमतों को भी इस्लाम के ज़ेरे नगीं लायेंगे, चुनान्चे आप की पेशीनगोई पूरी हुई।

(अल बिदाया वन्निहाया जि. 4 स. 477, बुख़ारी शरीफ़ जि. 2/588)

अल ग़रज़ दिन रात की कोशिश से खन्दक़ तैयार हो गई अब कुफ़्फ़ार के लश्कर के लोग आये तो देखा कि मदीने का रास्ता बन्द है, इधर पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम ने यह किया कि ख़न्दक में जगह जगह तमाम महाज़ों पर चौकियाँ बना दी वहाँ 24 घन्टे पहरा होता था और औ़रतों बच्चों को ऊपर की जानिब एक क़िले में भेज दिया गया ताकि वहाँ पर कोई हमला आवर न पहुंच सके।

(अल-बिदाया वन्निहाया, 4/485)

यहा मरहला तारीख़ में मदीने वालों के लिए इन्तिहाई संगीन था, क़ुरआने करीम में इस को बताया गया कि इन के लिए जीना मुश्किल हो रहा था, खाने पीने की तंगी थी, फ़क्र व फ़ाक़े का आ़लम यह था कि पेट पर पत्थर बाँध कर महाज़ पर पहरादारी की जाती थी अगर कोई काफ़िर आ जाता तो झड़पें भी होती थीं एक अ़जीब व ग़रीब ख़ौफ़ व ख़तरे का माहौल था। तक़रीबन एक महीने तक सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने उसे झेला और कुफ़्फ़ार का 10 हज़ार का लश्कर भी बड़ा परेशान क्योंकि इतने बड़े मज्मे को खिलाना पिलाना यह भी एक अहम काम है।

अल्लाह तआ़ला ने तक़रीबन एक महीने के बाद यह इन्तिज़ाम फ़रमाया कि एक सहाबी जिन का नाम नुऐम बिन मसऊ़द था और सरदार थे, वह इस्लाम ला चुके थे, लेकिन उन के इस्लाम का किसी को इल्म नहीं था, उनके तअ़ल्लुक़ात यहूदियों के क़बीले बनू क़ुरैज़ा से भी थे और मुशरिकीने मक्का से भी थे, क्योंकि वह दस हज़ार का लश्कर जो बाहर पड़ा हुआ था, बनू क़ुरैज़ा उसको मदद पहुंचा रहे थे, और बग़ावत का पूरा अंदेशा था, तो उन्होंने आकर अ़र्ज़ किया कि अगर आप फ़रमायें, तो मैं उन में ऐसी चीज़ें पेश करूं, जिस से उनके अंदर आपस में बद ऐतिमादी हो जाए, हुज़ूर ने इजाज़त दे दी, चुनान्चे यह पहले बनू क़ुरैज़ा के यहाँ गए, और उनके सरदारों को जमा कर के कहा कि मैं तुम्हारा बहुत हम दर्द हूँ, जानते हो कि यह दस हज़ार का मजमा तो आज न कल चला जायेगा, तुम्हारा साबक़ा तो फिर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ही पड़ेगा, तुम उन से कैसे मुक़ाबला करोगे? इस लिए बेहतर यह है कि तुम हुज़ूर से सुलह कर लो, और अगर सुलह नहीं करते और तुम्हारा मूड लड़ने का बन रहा है, तो यह जो क़ुरैश और ग़िफ़ान के लोग पड़े हुए हैं, उन में से दस बीस आदमी जो अहम हैं उन को अपने पास गिरवी रखो ताकि यह तुम्हें छोड़ कर न जायें, चुनान्चे बनू क़ुरैज़ा की यह बात समझ में आ गई कि यक़ीनन हमें बेयार व मददगार छोड़ कर चले जायेंगे, जब उन से पक्की बात हो गई, तो फिर अबू सुफ़ियान से जाकर मिले और कहा कि बनू क़ुरैज़ा ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मुसालहत कर ली है, और इस पर बात तय हो गई है कि तुम्हारे दस सरदारों को पकड़ कर वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हवाले कर देंगे और उनको क़त्ल कर दिया जाएगा, उनके कान में यह बात पहुंचा दी। जब बनू क़ुरैज़ा उन से बात करने गए तो उन से यही बात रखी कि हमें तुम्हारे दस आदमी चाहियें, तो उनको नुऐम बिन मसऊ़द की बात का यक़ीन आ गया, और वह जो ताक़त थी कि ये लोग हमारा साथ देंगे, उस के टूटने से उन में कम हिम्मती पैदा हो गई, और उसी रात में अल्लाह तआ़ला ने निहायत ठंडी और ख़तरनाक आँधी चला दी कि उनके ख़ेमे और तंबू सब उखड़ गए, और जो सामान था वह सब उलट पुलट हो गया, इस तरह से रातों रात यह दस हज़ार का लश्कर वहाँ से दुम दबा कर भाग निकला, और अल्लाह तआ़ला ने बिल्कुल नामुराद व ख़ाइब व ख़ासिर(घाटे वाला) फ़रमाया। (अल बिदाया वन्निहाया जि. 4 स. 495, ज़ादुल मआ़द मुकम्मल 611, अर-रहीक़ुल मख़्तूम 487) (जारी)

हम इंतज़ार किए बिना जो करना है करेंगे

मनोज सिन्हा

जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा को लोग कई रूपों में जानते आए हैं। रेल मंत्रालय में उनके तमाम काम लोग याद करते हैं और टेलीकॉम मिनिस्टर के तौर पर उन्होंने एक मृतप्राय विभाग को पुनजीर्वित कर दिया। विप्लवग्रस्त जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 को समाप्त हुए 6 अगस्त को दो वर्ष पूरे हो रहे हैं। आज यहां जब हालात तेजी से बदल रहे हैं, सरकार की कार्य योजना पर उपराज्यपाल से हुई एक लम्बी बातचीत के प्रमुख अंश यहां पेश किए जा रहे हैं :-

प्रश्नः- उपराज्यपाल कहने में मेरी जुबान थोड़ी लटपटाती है, मैं आपको राज्यपाल महोदय कब कह सकूंगा..?

उत्तरः- मैं आपके प्रश्न का सीधा उत्तर देना चाहूंगा। आप जानना चाहते हैं कि राज्य का दर्जा इसे कब दिया जाए। देश के गृह मंत्री अमित शाह ने देश की संसद में स्पष्ट रूप से भरोसा दिया था कि उचित समय पर राज्य का दर्जा दिया जाएगा। प्रधानमंत्री ने भी जब राष्ट्र को संबोधित किया था, तो उसमें ये बात कही थी। पिछले दिनों 24 जून को जब यहां के विभिन्न राजनैतिक दलों के लोग दिल्ली में बैठक के लिए गए थे, तब वहां भी यह प्रश्न उठा था।

प्रश्नः- लोगों के मन में जिज्ञासा है कि यह काम जल्दी से जल्दी कैसे हो और मेरा प्रश्न भी उसी से संबंध है?

उत्तरः- मैं अपने संवैधानिक दायित्वों को समझता हूं जो काम देश की संसद का है, उस पर मैं राय दूं, यह अतिक्रमण होगा।

प्रश्नः- वायदे बहुत से है जम्मू कश्मीर की जनता से। एक वायदा आपका भी है, कश्मीरी पंडितों की घर वापसी का, उसका उचित समय कब आएगा.?

उत्तरः- मैं कश्मीरी पंडितों के विषय पर बाद में आऊंगा, लेकिन जो वायदे पिछले कुछ सालों में पूरे किए गए, उन पर ध्यान दिलाना चाहूंगा। एक पीएमडीपी नाम से प्रोजेक्ट चलता है, प्राइम मिनिस्टर डेवलपमेंट प्लान। लद्दाख के बाहर निकल जाने के बाद मोटे तौर पर 55 हजार करोड़ रुपये की परियोजनाएं जम्मू कश्मीर में उस पैकेज के अंतर्गत चलती हैं और मुझे बताते हुए खुशी है कि दो दो कोविड लहर के बावजूद जब मैं आया था, तो व्यय करीब करीब 23 प्रतिशत था, आज बढ़कर 67 प्रतिशत हो गया है। अब जम्मू कश्मीर में आईआईटी भी है, आईआईएम भी है, दो-दो, एम्स भी बन रहे है।

प्रश्नः- कश्मीरी पंडित?

उत्तरः- कश्मीरी पंडितों के बारे में दो बात मैं बताता हूं, छहः हजार नौकरियां और छह हजार घर बनाने का वायदा भारत सरकार ने किया था। किसी न किसी कारण से इसमें व्यवधान डाला जाता था। आज 164 पदों को छोड़कर बाकी लोग नौकरी पा चुके हैं। बची हुई नौकरियां भी तीन-चार माह में दे दी जाएंगी। जहां तक आवास का प्रश्न है, 1800 फ्लैट वन रूम सेट तेज गति से बन रहे हैं। 6-7 माह में पूरे हो जाएंगे। बाकी की ज़मीन चिह्नित कर दी गई है। दो वर्ष में ये घर भी बना दिए जाएंगे, लेकिन मैं मानता हूं कि केवल नौकरी और घर से कश्मीरी पंडितों का पुनर्वास नहीं होगा। हमने कई ऐसे फैसले किए हैं, जिनसे ऐसा माहौल बने कि वो आकर बस सकें।

प्रश्नः- कश्मीर में बेरोज़गारी दर देश से लगभग दोगुनी है। एक ही पद पर तीन-तीन लोग काम कर रहे हैं। लोग संविदा पर रख लिए गए, उनको वेतन नहीं मिल रहा है। कुछ लोग घर बैठे है, उनके पास नौकरी नहीं है। इस असंतुलन को कैसे दूर करेंगे..?

उत्तरः- मार्च में हमारी बेरोज़गारी दर 19.3 थी, जो महामानी में बढ़ी पर अब जो इस माह का ताज़ा आंकड़ा आया है, वह 10.3 या 10.4 हैं हम गोवा, दिल्ली, राजस्थान से बेहतर हैं।

प्रश्नः- आपने उत्तर प्रदेश का नाम नहीं लिया?

उत्तरः- मेरे ध्यान में नहीं आया। अभी थोड़ा ध्यान मैं इस ओर ले जाना चाहूंगा कि जम्मू कश्मीर को समझना है, तो इस बुनियादी तथ्य को जानना चाहिए। यहां की आबादी एक करोड़ तीस लाख है और जो बजट संसद ने पारित किया, वह एक लाख आठ हजार करोड़ रुपये का है। ये इस वर्ष नहीं हुआ हैं पिछले साल एक लाख करोड़ रुपये था, उसके पहले 90 हज़ार करोड़ रुपये, ये आजादी के बाद से बाकी राज्यों की तुलना में पर कैपिटा सात गुना या आठ गुना रहा है, फिर भी 970 गांव हैं, जो सड़क से नहीं जुड़े हैं। कई ऐसे स्थान हैं जहां ग्रिड पॉवर नहीं है। पीने के स्वच्छ पानी का इंतज़ाम भी हम नहीं कर सके हैं, दुर्भाग्य है इस प्रदेश का।

प्रश्नः शिकायत है कि एमएसएमई पर घोषणाएं की गईं, लेकिन बैंक ऋण देते ही नहीं है?

उत्तरः- जम्मू कश्मीर में ऐसी कोई शिकायत नहीं है। दूसरी बात पंचायत में हम यूथ क्लब बना रहे हैं। इसके ज़रिए कौशल विकास का काम हमने तेजी से शुरू कराया है, टाटा टेक्नोलॉजी के सहयोग से। बॉबे स्टॉक एक्सचेंज के साथ मिलकर एक 360 डिग्री फाइनेंशियल सर्विस की ट्रेनिंग बच्चों को दी जा रही है। हाईस्कूल-इंटर पास बच्चे तीन माह के प्रशिक्षण के बाद आराम से 25-30 हजार रुपये कमा सकते हैं। इस तरह के एक नहीं, अनेक काम हम कर रहे हैं। एक हौसला नाम की योजना बनाई है, महिला उद्यमियों के लिए। इस तरह के अनेक कार्यक्रम हम चला रहे हैं।

प्रश्नः- यह प्रक्रिया तब मुकम्मल होगी, जब एक राजनीतिक प्रक्रिया भी इस प्रदेश में आकार ले। आप 26 तारीख़ को गुपकार एलायंस के लोगों को ले गए, लेकिन लौटकर उनकी वाणी बदल गई। एक ओर कहा जाता है कि उनका जनाधार नहीं है और दूसरी ओर उनको आमंत्रित किया जाता है?

उत्तरः- राजनीतिक प्रक्रिया यहां पहले से शुरू हो गई थी। जब मैं यहां आ रहा था, तो मुझे प्रधानमंत्री ने दो बातें कहीं थी। एक, सामान्य लोगों से संवाद ज़्यादा से ज़्यादा करने की ज़रूरत है, दूसरी, पंचायती राज को मज़बूत करने की आवश्यकता है।

प्रश्नः- चुनावों में रक्त नहीं बहा पर सुरक्षा बलों पर हमले बढ़े हैं। उनके परिवारजनों पर भी हमले हो रहे हैं जो नए चुने हुए लोग हैं, विशेष समुदाय के, वो निशाना बनाए जा रहे हैं। इस पर आप लोगों की क्या नीति है?

उत्तरः- आज सुरक्षाबल अच्छी स्थिति में है। मोटे तौर पर घुसपैठ रुक गई। घटनाओं में भी काफी कमी आई है और पत्थरबाज़ी इतिहास की बात हो गई है।

प्रश्नः- अब ड्रोन हमले हो रहे हैं। बाहर का हाथ कश्मीर की अवाम

बाकी पेज 11 पर

आलाकमान को जो करना था वह कर चुके, देखना है कि कैप्टन-सिद्धू तालमेल कैसे बैठाते हैं : बाजवा

कैप्टन अमरिंदर और नवजोत सिंह सिद्धू के बीच सुलह कराने में कांग्रेस आलाकमान ने सफलता पा ली है, लेकिन राजनीतिक गलियारों में इस बात को स्वीकारा नहीं जा रहा, कहा जा रहा है कि दोनों के एक दूसरे को स्वीकार कर पाना इतना आसान नहीं है। सुलह की कामयाबी, चुनाव में कांग्रेस का चेहरा कौन होगा, आदि तमाम सवालों के जवाब के लिए प्रताप सिंह बाजवा जी से बात की, पेश है इस बातचीत के प्रमुख अंश :-

प्रश्नः- पंजाब कांग्रेस में लंबे वक्त से जो 'गृहयुद्ध' चल रहा था, क्या उसे अब ख़त्म मान लिया जाए?

उत्तरः- जब किसी भी कपड़े पर सिलवट पड़ जाती हैं तो प्रेस करने की ज़रूरत होती है। इसके लिए पहले मेज़ का जुगाड़ करना पड़ता है, फिर प्रेस को गर्म करना होता है। पंजाब में कांग्रेस की मुश्किल यह थी कि मेज का जुगाड़ नहीं हो पा रहा था, तो फिर आगे की क्या बात सोची जाती? सबकी कोशिशों से ऐसे हालात बने कि स्टेट की सारी लीडरशिप एक मंच पर आ गई। समझ लीजिए कि मेज़ का जुगाड़ भी हो गया है। प्रेस भी गरम हो गई है। अब सिलवट भी मिट ही जाएगी।

प्रश्नः- लेकिन ऐसा माना रहा है कि 'सीजफायर' लंबे समय तक चलने वाला नहीं है?

उत्तरः- कांग्रेस आलाकमान और पार्टी के जो दूसरे ज़िम्मेदार ओहदेदार हैं, उन सबको जो ज़िम्मेदारी निभानी चाहिए थी, उन्होने निभा दी है। अब आगे इस बात पर निर्भर है कि कैसे कैप्टन और सिद्धू के बीच तालमेल किस तरह बैठता है। इसमें तो हमें कोई शक नहीं कि पार्टी में अलग-अलग स्तर पर मतभेद थे। इसे दूर होने में समय लगेगा, लेकिन यह देखना ज़्यादा महत्वपूर्ण होगा कि कैप्टन और सिद्धू कैसे इंटरैक्ट करते हैं।

प्रश्नः- कैप्टन क्या सिद्धू को इतनी असानी से स्वीकार कर लेंगे..?

उत्तरः-मैं किसी के मन के भीतर तो बैठा नहीं हूं। इसका जवाब तो कैप्टन साहब से ही मिल सकता है।

प्रश्नः- कांग्रेस आलाकमान जिस तरह से सिद्धू के पक्ष में अड़ा, उसके पीछे का क्या संदेश है?

उत्तरः- हाईकमान के मन में क्या था, वह भी नहीं मैं बता सकता। लेकिन आलाकमान का जो फैसला था, वह कांग्रेस के सभी निष्ठावान लोगों का मानना पड़ा, कैप्टन भी उसमें शामिल है।

प्रश्नः- एक समय कैप्टन अमरिंदर सिंह के साथ आपके रिश्तों में बहुत कड़वाहट थी लेकिन कहा जाता है कि सिद्धू को रोकने के लिए आप दोनों एक हो गए..?

उत्तरः- यह बेबुनियाद बात है। सिद्धू को रोकने का मेरा कोई प्रोग्राम ही नहीं था। पार्टी आलाकमान को तय करना था कि किसे क्या बनना है और किसे नहीं बनना है। मैंने तो पहले से ही घोषित कर रखा है कि इस बार मैं न तो पीसीसी चीफ की रेस में हूं और न ही सीएम की। जहां तक बात कैप्टन साहब के साथ रिश्तों की है तो मेरा उनके साथ कुछ निश्चित मुद्दों पर सैद्धांतिक मतभेद था, उन मुद्दों पर जब कैप्टन साहब ने कुछ न कुछ कार्रवाई शुरू की है तो हमने भी अपना रुख़ नरम कर लिया। साढ़े चार वर्ष बाद जब मैं कैप्टन से मिला तो वह सिद्धू को रोकने के लिए नहीं था बल्कि मुझे आलाकमान ने जो डयूटी सौंपी थी, उसके तहत मिला था।

प्रश्नः- सिद्धू के प्रदेश अध्यक्ष बनने से क्या फर्क पड़ सकता है चुनाव में?

उत्तरः- यह तो समय ही बताएगा। अध्यक्ष बनने के बाद जब सिद्धू साहब जिलेवार दौरे पर निकलेंगे तो कैसे काडर रिएक्ट करता है, काडर के बाद वोटरों का क्या रिएक्शन होता है, यह सब देखने के बाद ही किसी नतीजे पर पहुंचा जा सकता है। पंजाब में अभी इलेक्शन वाला मूड नहीं दिख रहा, किसान तो बॉर्डर पर बैठे हुए हैं।

प्रश्नः- पंजाब में कांग्रेस का मुक़ाबला किसके साथ देख रहे हैं?

उत्तरः- भाजपा के लोग तो वहां निकल ही नहीं पा रहे हैं। मालवा बेल्ट में सबसे ज़्यादा विधान सभा सीट आती हैं, उसमें ज़्यादातर सीटों पर हमारा मुक़ाबला आम आदमी पार्टी के साथ होगा। और जो दोआब और माझा का इलाक़ा है वहां हमारी लड़ाई अकाली दल के साथ होगी।

प्रश्नः- कांग्रेस विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री के चेहरे के साथ जाएगी या बिना चेहरे के?

उत्तरः- इस बात का जवाब मैं नहीं दे पाऊंगा। यह तो पार्टी आलाकमान को तय करना है कि वह क्या चाहता है? यह आलाकमान तय करेगा कि वह सीएम के चेहरे के साथ चुनाव में जाना चाहती है या नहीं। जाना चाहते हैं तो किसका चेहरा लेकर जाना चाहिए।

प्रश्नः- पंजाब के चुनाव में कांग्रेस को क्या उम्मीदें देखती हैं..?

उत्तरः- तीन-चार ऐसे वादे हैं जो अगर सरकार पूरे कर देती है तो मैं समझता हूं कि कांग्रेस बेहतर स्थिति में होगी। एक तो गुरु से किए वादे, दूसरा ड्रग का इश्यू है, तीसरा 300 यूनिट फ्री बिजली देने की बात है और चौथा दलित-पिछड़े वर्ग के छात्रों को स्कॉलरशिप का जो पैसा रुका है, वह उनके एकाउंट में डाला जाए। ❑❑

मिज़ान .... आलोक मेहता

पत्रकारिता को साफ-सुथरा रखने के लिए प्रयास आवश्यक

ब्रिटेन के विधि आयोग ने हाल ही में सरकार और संसद के लिए सरकारी गोपनीयता क़ानून में संशोधन प्रस्तावित किए हैं। इस प्रस्ताव में लीक डाटा हासिल करने वाले पत्रकार को जासूस मानकर 2 से 14 सालों तक की सज़ा का प्रावधान है। यह प्रस्ताव इस्राईली कंपनी एन०एस०ओ० की जानकारियों बारे डाटा लीक होने से मचे बवाल के बाद लाया गया हैं। संसद में रखे जाने से पहले ही इसका विरोध भी शुरू हो गया है। अभिव्यक्ति की आज़ादी के समर्थक ऐसे क़दम को प्रेस की आज़ादी, खोजी पत्रकारकारिता के विरुद्ध बता रहे हैं। अत्याधुनिक संचार साधनों के दौर में लोकतांत्रिक देशों के लिए नई समस्याएं सामने आा रही है।

भारत में भी सुरक्षा और सरकार विरोधी गतिविधियों या उन्हें रोकने के लिए जासूसी तरीक़े अपनाए जाने पर हंगामा बरपा है। यही नहीं, कुछ बड़े मीडिया संस्थानों के प्रबंधकों के ठिकानों पर आय कर विभाग के छापों पर भी मीडिया की आवाज़ दबाने की कोशिश के रूप में माना जा रहा है। फिर भी विभिन्न राज्यों के अख़बार पत्रिकाएं और न्यूज़ चैनल, डिजिटल चैनल सरकार की कमियों को उजागर करने के साथ प्रधानमंत्री सहित नेताओं के विरुद्ध तीखी टिप्पणियां कर रहे हैं। यही लोकतंत्र की ताक़त है।

असली संकट इस बात है कि पत्रकार सही या ग़लत इरादे से संचार साधनों से जासूसों की तरह जानकारियां एकत्र करते हैं और सरकार राजनीतिक अथवा सुरक्षा कारणों से पत्रकारों की जासूसी करवाती है। पत्रकार ही नहीं, सत्ताधारी सरकारें नेताओं, अधिकारियों, व्यापारियों पर भी बाक़ायद निगरानी करती रही है। कारपोरेट प्रतिद्विंद्विता में निजी एजेंसियों से अवैध जासूसी के मामले सामने आए हैं। सरकारी गोपनीयता कानून ब्रिटिश राज की देन हैं। 1923 में लागू हुए कानून में आज़ादी के बाद से कई संशोधन हुए हैं, मगर इसके दुरुपयोग के ख़तरे बने हुए हैं।

सामान्यत: पत्रकारों पर इस क़ानून का इस्तेमाल नहीं होता लेकिन यह भी सच है कि पत्रकार का चोगा पहनकर विदेशी ही नहीं देश के लोगों ने भी भारत विरोधी विदेशी ताक़तों, एजेंसियों के लिए मोहरे बनकर जासूसी का काम किया है। आतंकवादी अथवा नक्सली संगठनों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करने वाले पत्रकारों/लेखकों या प्राध्यापकों पर केन्द्र या राज्य सरकरों पर नज़र रहती है और गंभीर मामलों में कानूनी कार्रवाई भी हो रही हैं।

पत्रकारिता पर सरकारों के दबाव का विरोध स्वाभाविक है। पत्रकार संगठनों से अधिक राजनीतिक पार्टियां सड़क से संसद तक आवाज़ उठाती हैं दूसरी ओर समाज का एक वर्ग और वरिष्ठ पत्रकार यह मुद्दा भी उठाते हैं कि हम अपने लिए बने नियम कानूनों, प्रेस कौंसिल, एडिटर्स गिल्ड, ब्रॉडकास्ट एडिटर्स एसोसिएशन द्वारा निर्धारित आचार संहिता का कितना पालन कर रहे हैं। मुझ जैसे कई संपादक लेखक अपने क्षेत्र में रही कमज़ोरियों और गड़बड़ियों को स्वीकारने एवं इसमें सुधार के पक्षधर रहे हैं।

> **पत्रकारिता पर सरकारों के दबाव का विरोध स्वाभाविक है। पत्रकार संगठनों से अधिक राजनीतिक पार्टियां सड़क से संसद तक आवाज़ उठाती हैं दूसरी ओर समाज का एक वर्ग और वरिष्ठ पत्रकार यह मुद्दा भी उठाते हैं कि हम अपने लिए बने नियम कानूनों, प्रेस कौंसिल, एडिटर्स गिल्ड, ब्रॉडकास्ट एडिटर्स एसोसिएशन द्वारा निर्धारित आचार संहिता का कितना पालन कर रहे हैं। मुझ जैसे कई संपादक लेखक अपने क्षेत्र में रही कमज़ोरियों और गड़बड़ियों को स्वीकारने एवं इसमें सुधार के पक्षधर रहे हैं।**

आजकल मीडिया में कारपोरेट प्रभाव की भी बहुत चर्चा हो रही है। पहले भी टाटा, बिड़ला, डालमिया, गोयनका, जैन जैसे बड़े उद्योगपतियों के व्यवसायिक समूहों के प्रकाशन समूह रहे हैं। उनका मिला जुला असर रहता था। राजीव, राव, अटल, मनमोहन सिंह राज में मीडिया का विस्तार होता गया।

पूँजी का प्रभाव बढ़ गया। तेज़ी से बढ़ रहे अंबानी समूह ही नहीं प्रदेशों में भी अरबपति कहे जाने वाले मालिकों के मीडिया संस्थान आ गए। यहां से पेंच शुरू हुआ। आपातकाल से पहले या बाद में भी कई मालिकों और व्यवसायिक कंपनियों पर आयकर, विदेशी मुद्रा से संबंधित आर्थिक अपराधों के आरोपों पर छापे पड़ते रहे है और क़ानूनी कार्रवाई हुई लेकिन तब अधिकांश संपादकों, पत्रकारों ने इन्हें पत्रकारिता पर हमला नहीं बताया। मगर प्रकाशन या प्रसारण से इतर व्यावसायिक धंधों, पेड न्यूज या चुनावों के दौरान प्रचार के लिए अवैध रूप से करोड़ों की कमाई या विदेशों में खाते खोलने पर आयकर और प्रवर्तन निदेशालय की कार्रवाई को अभिव्यक्ति की आज़ादी में बाधक कैसे कहा जाएगा?

इसी तरह धर्म, जाति, साम्प्रदायिक मुद्दों के लिए निर्धारित नियम-क़ानूनों, आचार संहिता का पालन नहीं करने, प्रमाणों के बिना अनर्गल आरोपों के उपयोग, अश्लील सामग्री के प्रकाशन, हथियारों की खरीदी में विदेशी कंपनियों की लॉबी की संलिप्ता वाली ख़बरें, पेड न्यूज़ जैसे गंभीर मामले बढ़ते जा रहे हैं। इन पर सरकारी कानूनी कार्रवाई में समय लगता है लेकिन मीडिया की विश्वसनीयता कम होती जा रही है। यह काम एक वर्ग करता है, लेकिन कलंक संपूर्ण पत्रकारिता पर लगता है।

आज चीन और पाकिस्तान भी भारतीय मीडिया को प्रभावित करने की अधिक कोशिश कर रहे हैं। लेकिन अमेरिका, सोवियत रूस और ब्रिटिश फ्रेंच लॉबी ही नहीं, उनकी गुप्तचर एजेंसियों के साथ जुड़ जाने वाले पत्रकारों के आपराधिक मामले भी आए हैं। डिजिटल युग में तो यह ख़बरें अधिक बढ़ गए हैं। दो-चार सालों में विदेशों से अवैध ढंग से करोड़ों रुपयों की पूंजी लेकर वैब पोर्टल या टी.वी. न्यूज़ नेटवर्क चलाने पर क़ानूनी शिकंजा कसने को अभिव्यक्ति के अधिकार पर हमला कैसे माना जा सकेगा? मीडिया संस्थानों, संपादकों, पत्रकारों की वैचारिक मत भिन्नताओं को सदैव उचित कहा जाता रहा है लेकिन व्यावसायिक हितों की तरह वैयक्तिक प्रतिस्पर्धा, जलन, पूर्वाग्रह के कारण कई संस्थान और पत्रकार भी सरकारों या अन्य संगठनों के माध्यम से एक दूसरे को नुकसान पहुंचाने, कानूनी कार्रवाई, सोशल मीडिया पर अनर्गल आरोपबाज़ी करवाने की घिनोनी गतिविधियां करने लगे हैं। इस तरह अपनी ही बिरादरी की खींचतान से पहले भी नामी सम्पादकों को सरकारों तथा प्रबंधन से बहुत नुकसान पहुंचा है। ऐसे में पत्रकारिता के आंगन को साफ सुथरा रखने और अभिव्यक्ति के अधिकारों को अक्षुण्ण रखने के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयासों की आवश्यकता है।❏❏

रोज़गार ....

रंगों से संवारें भविष्य

कलर्स यानि, रंग-बिरंगी पेंट्स इंडस्ट्री का दुनिया भर में कारोबार अत्यंत तेज़ी से फैल रहा हैं अत्याधुनिक रहन-सहन की शैली, उठते जीवन स्तर, बढ़ती व्यक्तिगत आय और परम्परागत रंगों के बजाये चटकीले और आकर्षक रंगों की ओर झुकाव ने नि:संदेह पेंट्स इंडस्ट्री को आज बहुआयामी बना दिया है। अब पेंट्स का मतलब रंग-रोगन तक ही नहीं रह गया है। पर्यावरण हितैषी सोलर कोटिंग, हीट रिफ्लैक्टर, सालोसाल तक धूप एवं बरसात की मार के बावजूद चमकदार बने रहने की क्षमता वाले पेंट्स की विविधता अब देश के पेंट्स बाजार में देखी जा सकती है। भारतीय पेंट्स बाजार फिलहाल 25,000 करोड़ रुपए के करीब है जो कि लगभग 18 प्रतिशत की दर से विकसित हो रहा है। इस अनूठी इंडस्ट्री में भारी संख्या में लोगों के लिए आने वाले समय में रोज़गार सृजित होंगे। युवाओं को इस व्यवसाय की ज़रूरतों के अनुसार स्वयं को ढालना होगा तभी वे समय पर अवसरों का लाभ इस क्षेत्र में कैरियर निर्माण हेतु उठा सकते हैं।

पेंट्स इंडस्ट्री की नौकरी महज़ पेंट्स उत्पादन और विक्रय एजेंट्स तक ही सीमित नहीं हैं अन्य प्रोफेशन की तरह इसमें भी तमाम तरह की पेशेवर विशेषज्ञताओं की आज बड़े पैमाने पर ज़रूरत हो गई हैं इनमें नए, आकर्षक, चमकदार एवं सस्ते पेंट्स उत्पादन की तकनीक आरएंडडी में कार्यरत लोगों के लिए विकसित करने की चुनौती उपभोक्ताओं की पसंद के अनुसार रंगों की नई श्रृंखलाएं तैयार कर बाज़ार में उतारने का लक्ष्य, पेंट्स की दीर्घायु के लिए विभिन्न रसायनों और अन्य घटकों का इस्तेमाल करने की सोच वाले अनुभवी लोग शहरों से लेकर ग्रामीण इलाकों तक पेंट्स की मांग बढ़ाने वाली मार्केटिंग कोर्स की हिस्सेदारी मज़बूत करने का चैलेंज स्वीकारने वाले युवा आदि का ख़ासतौर से इस संदर्भ में उल्लेख किया जा सकता है।

यहां बताना ज़रूरी है कि पेंट्स का काम महज़ घर सुंदर बनाना ही नहीं बल्कि लोहे से तैयार स्ट्रक्चर्स को जंग से बचाना, तपती धूप की गर्मी को परावर्तित करना आदि भी है। यही कारण है कि पेंट टेक्नोलॉजी के अन्तर्गत रेजिन पॉलीमर, पिग्मेंटस तथा अन्य रसायनों का अध्ययन किया जाता है जिनका इस्तेमाल इनके उत्पादन में किया जाता है। रंगों की नई श्रृंखलाओं का विकास भी इसी शोध एवं अध्ययन की प्रमुख कड़ी है। विशिष्ट उत्पादों एवं इंडस्ट्री के लिए खास प्रकार के रंगों के उत्पादन की प्रक्रिया विकसित करना इस प्रोफेशन में कम चुनौतीपूर्ण कार्य नहीं हैं जैसे एयरक्राफ्ट इंडस्ट्री ऑटो मोबाइल इंडस्ट्री, घरेलू डेकोरेशन आदि।

केमिकल टेक्नोलॉजी कैमिस्ट्री अथवा पॉलीमर साइंस आदि की एजुकेशन बैंकग्राउंड वाले युवाओं के लिए इस प्रोफेशन में अपेक्षाकृत तेजी से बढ़ने के अवसर हो सकते हैं। वैसे बीटेक (पेंट टेक्नोलॉजी) का विशिष्ट कोर्स 10+2 के बाद देश के कई इंजीनियर्स कॉलेजों में संचालित किया जाता है। दाख़िले अमूमन चयन परीक्षा के ही आधार पर होते हैं। इसके अलावा डिप्लोमा इन पेंटस एप्लीकेशन टेक्नोलॉजी का खास तरह का कोर्स मुम्बई के गरवारे इंस्टिट्यूट में उपलब्ध है। इंस्टिट्यूट ऑफ कैमइन्फार्मेक्टिस, नोएडा में पत्राचार माध्यम से पेंट एण्ड कोचिंग टेक्नोलॉजी आधारित कोर्स उपलब्ध है।

बैंकों द्वारा सस्ते आवासीय ऋण की सुलभता, ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री की तीव्र गति से हो रही वृद्धि तथा इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में बढ़ते निवेश में यह निष्कर्ष निकालना क़तई ग़लत नहीं होगा कि भविष्य में पेंट्स की मांग में तेज़ी आएगी। इस क्रम में न सिर्फ उत्पादन से जुड़े ट्रेंड लोगों के लिए रोज़गार के मार्ग प्रशस्त होंगे बल्कि महानगरों की परिधि से बाहर भी मार्केटिंग की ज़रूरत पड़ेगी।

देश की प्रमुख पेंट उत्पादक कंपनियों में एशियन पेंट्स बर्जर पेंटस, जैनसन एण्ड निकोल्सन पेंटस शालीमार पेंट्स आईसीआई (इंडिया) नेरोलेक आदि का ज़िक्र किया जा सकता है। हालांकि असंगठित क्षेत्र में 2 हजार से अधिक छोटी बड़ी कंपनियां भी इस क्षेत्र में कारोबार कर रही हैं। देश में फिलहाल पेंट्स की खपत महज़ 0.5 किग्रा प्रतिव्यक्ति सालाना है जो कि दक्षिणी एशियाई देशों में 4 किग्रा तथा विकसित देशों में 22 किग्रा है। ज़ाहिर है कि आने वाले समय में अनुपात घटेगा और देश में पेंट्स की मांग में ज़बरदस्त बढ़ोत्तरी होगी। इसका प्रभाव ज़्यादा नौकरियों के रूप में भारतीय युवाओं के समक्ष आएगा।❏❏

इस्लामी दुनिया

ईरान : राष्ट्रपति पद के लिए रईसी के नाम का आधिकारिक अनुमोदन

तेहरान: ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्ला अली खामनेई ने देश के राष्ट्रपति पद के लिए कट्टरपंथी नेता इब्राहीम रईसी के नाम का आधिकारिक तौर पर अनुमोदन किया। रईसी ऐसे समय में देश की कमान संभालने जा रहे हैं जब अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण न सिर्फ ईरान की अर्थव्यवस्था खस्ताहाल है बल्कि देश की मुद्रा रियाल कमज़ोर हुई है। रईसी न्यायपालिका के पूर्व प्रमुख रहे हैं और खामनेई के करीबी हैं। खामनेई ने रईसी से देश के गरीब लोगों को सशक्त बनाने और राष्ट्रीय मुद्रा में सुधार करने की अपील की है।

काबुल में कार्यवाहक रक्षामंत्री को निशाना बनाकर धमाका, 10 घायल

अफग़ानिस्तान के कार्यवाहक रक्षामंत्री बिस्मिल्लाह मोहम्मद के काबुल स्थित घर के पास एक धमाका हुआ। धमाका रक्षामंत्री को निशाना बनाकर किया गया था। स्वास्थ्य विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि इस घटना में कम से कम 10 लोग घायल हो गए। वहीं, देश के गृहमंत्री मीरवाइज स्तानिक जई ने बताया कि विस्फोट के बाद तीन बंदूकधारी क्षेत्र में घुसे थे जिन्हें सुरक्षाबलों ने मार गिराया। क्षेत्र में सुरक्षाबलों ने मोर्चा संभाल रखा है। रक्षामंत्री और उनका परिवार पूरी तरह सुरक्षित है।

मिस्र में आतंकी हमले में पांच सैनिकों की मौत

काहिरा : इस्लामिक स्टेट संगठन के आतंकवादियों ने मिस्र के सिनाई प्रायद्वीप के अशांत उत्तरी भाग में एक नाके पर घात लगाकर हमला किया। हमले में कम से कम पांच सैनिकों की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया शेख जुवैद शहर में हुए हमले में कम से कम छह अन्य सैनिक घायल हुए हैं जिन्हें भूमध्यसागरीय शहर अल अरीश में सेना के अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

बांग्लादेश में खाई में गिरा ट्रक, छह मरे

ढाका : बांग्लादेश के मदारीपुर जिले में पिछले दिनों एक तेज़ रफ्तार ट्रक के खाई में गिरने से छह लोगों की मौत हो गई और सात अन्य घायल हो गए। ढाका ट्रिब्यून के शिबचर राजमार्ग पुलिस के प्रभारी अधिकारी मोहम्मद अली के हवाले से बताया कि ट्रक बरगुना से ढाका जा रहा था, जब वह शिबचर में एरियल खान ब्रिज टोल प्लाजा के पास पलट गया। ट्रक में भवन निर्माण सामग्री लदी थी। पुल की रैलिंग से टकराने के बाद चालक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया, जिससे दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। द डेली स्टार की रिपोर्ट के अनुसार, 11 लोगों को गंभीर हालत में पास के अस्पताल में भेजा गया, जिनमें से चार की इलाज के दौरान मौत हो गई।

ख़तरें में है मानव जाति समय कम है

निरंकार सिंह

कोरोना महामारी से दुनियाभर में मचे हा-हाकार के बीच यह प्रश्न एक बार फिर चर्चा का विषय बन गया है कि क्या कभी ऐसा भी हो सकता है कि धरती से इंसानों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाए? इतिहास के पन्नों में ऐसा बहुत कुछ है जिससे इस आशंका को बल मिलता है हालांकि अतीत में ऐसा कभी नहीं हुआ है कि धरती पर से संपूर्ण मानव जाति का ख़ात्मा हो गया हो। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि भविष्य में ऐसा नहीं हो सकता। दुनिया के मशहूर वैज्ञानिक स्टीफेन हॉकिंग तो यह भविष्यवाणी कर चुके थे कि अगले सौ दो सौ सालों में पृथ्वी पर ऐसी घटना घट सकती है कि जिससे संपूर्ण मानव जाति का नामोनिशान ही मिट जाए। उनका यह भी कहना था कि मानव जाति को बचाने के लिए एक ही तरीक़ा है कि हम जल्द से जल्द चन्द्रमा और अन्य ग्रहों पर बस्तियां बसाने के प्रयास तेज़ करें।

आज से लगभग छब्बीस करोड़ वर्ष पहले धरती को सामूहिक विनाश झेलना पड़ा था। इस दौरान पूरी पृथ्वी से जीव-जंतू मिट गए थे। इसी के साथ ही भूगर्भिक और बाह्य कारणों से धरती में अब तक सामूहिक विनाश की घटनाएं बढ़ कर छह हो गई हैं। अमेरिका में न्यूयार्क यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर मिशेल रेम्पिनो का कहना है कि सामूहिक विनाश के कारणों की जांच के बाद ही हम यह जान पाने में सफल हुए है कि अब तक कितनी बार पृथ्वी में सामूहिक विनाश की घटनाएं हो चुकी हैं। पूर्व में हुए अध्ययनों से पता चलता है कि सामूहिक विनाश की सभी घटनाएं पर्यावरणीय उथल-पुथल का नतीजा थीं। इस दौरान बड़े पैमाने पर बाढ़ और ज्वालामुखी फटने की घटनाएं हुईं। इससे लाखों किलोमीटर तक धरती में लावा फैल गया था और धरती जीव-जंतुओं से विहीन हो गई थी।

क्या सचमुच इस सदी के ख़त्म होते-होते इंसान का अस्तित्व इस धरती से मिट जाएगा? अब यह प्रश्न मानव जाति के लिए चिंता का विषय बन गया है क्या कोई महामारी, परमाणु युद्ध, जलवायु परिवर्तन, कृत्रिम बौद्धिकता, जैव इंजीनियरिंग, जनसंख्या विस्फोट अथवा कोई बड़ा आतंकी हमला पृथ्वी पर प्राणी जीवन को संकट में डाल देगा? मानव जाति के इतिहास में हर हज़ार साल के बाद ऐसे दौर आते रहे हैं जब एक तिहाई आबादी ही ख़त्म हो जाती है लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ कि संपूर्ण मानव जाति लुप्त हो गई हो। एक हजार वर्ष पहले पूरी दुनिया में प्लेग की वजह से करोड़ों लोगों की मौत हो गई थी। छिहत्तर हज़ार वर्ष पहले नब्बे प्रतिशत मानव जाति ही ख़त्म हो गई थी। आनुवंशिकी प्रमाणों से पता चलता है कि एक समय ऐसा भी आ गया था जब धरती पर दस हजार के आसपास ही लोग बचे थे।

आज हमारे सामने सबसे बड़ा ख़तरा परमाणु युद्ध का हैं। पिछली सदी के चौथे दशक में तो अमेरिका और सोवियत संघ एक दूसरे को खत्म करने पर आमादा हो गए थे। पर अब किसी तरह से यह ख़तरा टल गया था। खतरे की एक घंटी भी परमाणु युद्ध का कारण बन सकती है। 1995 में अमेरिका ने उत्तरी क्षेत्र में आकस्मिक प्रकाश के अध्ययन के लिए एक रॉकेट छोड़ा था। तब रूस के लोगों ने राष्ट्रपति से कहा था कि यह परमाणु युद्ध है लेकिन रूसी राष्ट्रपति ने कहा कि यह परमाणु युद्ध नहीं है। पर आज फिर दुनिया परमाणु युद्ध के मुहाने पर खड़ी है। दक्षिणी प्रशांत महासागर में अमेरिका और चीन की सेनाएं आमने-सामने हैं। उत्तरी कोरिया के राष्ट्रपति किम बार-बार अमेरिका को परमाणु युद्ध की धमकी देते रहते हैं। अफग़ानिस्तान में तालिबान फिर से सत्ता कब्ज़ाने में लगे हुए हैं। यह भी हो सकता है कि आतंकी परमाणु हथियारों पर कब्ज़ा कर लें और फिर परमाणु से दुनिया में परमाणु युद्ध शुरू हो जाए। हालांकि परमाणु युद्ध से पूरी मानव जाति को ख़तरा नहीं है। पर दुनिया के कई शहर नेस्तानाबूद हो सकते हैं लेकिन इस जंग से पूरी दुनिया में धूल के विशाल गुबार बनेंगे और पर्यावरण बदल जाएगा। विशेषज्ञों के अनुसार धूल के ये गुबार दशकों तक बने रह सकते हैं। इससे सूरज की रोशनी धरती पर आनी बंद हो जाएगी। तब फसले भी पैदा नहीं होंगी। मानव जाति के साथ-साथ अन्य जीव जंतुओं का अस्तित्व भी ख़तरे में पड़ जाएगा। ऐसे में दुनिया की बहुत बड़ी आबादी ख़त्म हो सकती है।

आज हमारे सामने सबसे बड़ा ख़तरा परमाणु युद्ध का हैं। पिछली सदी के चौथे दशक में तो अमेरिका और सोवियत संघ एक दूसरे को खत्म करने पर आमादा हो गए थे। पर अब किसी तरह से यह ख़तरा टल गया था। खतरे की एक घंटी भी परमाणु युद्ध का कारण बन सकती है। 1995 में अमेरिका ने उत्तरी क्षेत्र में आकस्मिक प्रकाश के अध्ययन के लिए एक रॉकेट छोड़ा था। तब रूस के लोगों ने राष्ट्रपति से कहा था कि यह परमाणु युद्ध है लेकिन रूसी राष्ट्रपति ने कहा कि यह परमाणु युद्ध नहीं है। पर आज फिर दुनिया परमाणु युद्ध के मुहाने पर खड़ी है।

लंदन यूनिवर्सिटी में किए गए एक अध्ययन के अनुसार मानव जाति के सामने एक बड़ा संकट जनसंख्या विस्फोट का है। बढ़ती आबादी और जलवायु परिवर्तन संयोग नहीं है। हम दुनिया की मौजूदा आबादी का ही पेट नहीं भर पा रहे हैं। बढ़ती आबादी की वजह से भोजन का संकट खड़ा होने लगा है। खेती की ज़मीन सिकुड़ती जा रही है और वह बंजर ज़मीन में बदल रही है। ऐसे में सबके लिए खाद्यान्न कहां से जाएगा, यह कोई नहीं सोच रहा। बढ़ती आबादी के साथ-साथ संसाधनों की कमी आज सबसे बड़ा संकट है।

आस्ट्रेलिया में किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि कैसे जलवायु परिवर्तन के चलते अगले तीन दशकों में मानव सभ्यता ख़त्म हो सकती है। सुनने में ऐसा लगता है कि बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बताया जा रहा है, लेकिन इसके सच होने की संभावना कल्पना से ज़्यादा भी हो सकती है। इस विचार समूह ने चेतावनी दी है कि मानव सभ्यता अगले तीन दशकों से ज़्यादा नहीं बच पाएगी। इस वर्ष 2050 तक पृथ्वी का औसतन तापमान तीन डिग्री तक बढ़ जाएगा। इस शोध को समझाते हुए आस्ट्रेलियाई रक्षा बल के प्रमुख और रॉयल आस्ट्रेलियाई नेवी के एडमिरल क्रिस बैरी बताते हैं कि यह रिपोर्ट इंसान और पृथ्वी की निराशाजनक स्थिति को दर्शाती है। यह बताती है कि मानव जीवन अब भयंकर रूप से विलुप्त होने की कगार पर है और इसकी वजह है जलवायु संकट।

जलवायु में तेज़ी से हो रहा बदलाव मानव अस्तित्व के लिए ख़तरा बनता जा रहा है। ऐसा ख़तरा जो अब बेक़ाबू है। धरती पर परमाणु युद्ध के मानव

बाक़ी पेज 11 पर

कोरोना की तीसरी लहर

पिछले दिनों कई अखबारात में यह ख़बर आई की कोरोना की तीसरी लहर इसी माह में संभावित है। विशेष बात यह है कि कोरोना के सबसे ज़्यादा मामले भले ही केरल में पाए जा रहे हों, नए केसों में बढ़ोत्तरी दिल्ली समेत 13 राज्यों में देखी जा रही है। विशेषकर पहाड़ी राज्यों - हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में तो यह बढ़ोत्तरी क्रमश: 64 प्रतिशत और 61 प्रतिशत की है। ज़ाहिर है, तीसरी लहर के जिस ख़तरे की बात लगातार की जा रही थी, वह अब करीब आ गया है। दुनिया के कई अन्य देश कोरोना संक्रमण की तेज़ी से बढ़ती संख्या की चपेट में हैं। जापान में ओलिंपिक खेल तो कार्यक्रम के मुताबिक चल रहे हैं, लेकिन कोविड केसों की बढ़ती संख्या के चलते देश के कई हिस्सों में आपातकाल लागू करना पड़ा है। चीन तो कोरोना से उबर चुका था, लेकिन वहां भी इसने फिर तेज़ी से सिर उठाया है। नानजिंग शहर इसका नया केन्द्र है। 50 प्रतिशत से ज़्यादा आबादी का टीकाकरण हो जाने के बावजूद अमेरिका में भी कोरोना संक्रमण बढ़ रहा है और काफी हद तक यूरोपीय देशों में भी। अपने देश में तो टीकाकरण की रफ्तार भी काफी कम है। करीब 94 करोड़ की वयस्क आबादी में से जुलाई के अंत तक 10.3 करोड़ लोगों को ही वैक्सीन की दोनों डोज लगी थी। यानि लगभग 11। हाल में सीरो सर्वे के आंकड़ों ने ज़रूरत राहत दी थी, लेकिन ध्यान रखना चाहिए कि उसी सर्वे के मुताबिक 40 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिनमें एंटी बॉडीज नहीं डिवेलप हुई है। ज़ाहिर है, किसी भी तर्क से हम तीसरी लहर के खतरे को कम करके नहीं आंक सकते। ऐसे में बचाव के उपायों को तेज़ करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। ऐसा पहला उपाय टीकाकरण की रफ्तार को यथासंभव तेज़ करना ही है। पक्ष और विरोध में होने वाली राजनीतिक बयानबाज़ियों को किनारे करके देखें तो पिछले दिनों सरकार ने करीब 66 करोड़ डोज टीकों के आर्डर बुक किए हैं। इसके मद्देनज़र उम्मीद की जा सकती है कि टीकों की कमी वैसी समस्या इस महीने नहीं रहेंगी जैसी पिछले दिनों में दिखी थी। लेकिन तेज़ टीकाकरण की राह में यह एकमात्र बाधा नहीं है। सरकारी तंत्र की सीमाएं और आम लोगों की बेरुख़ी जैसी अड़चनें भी हैं। वर्ष के अंत तक पूरी वयस्क आबादी को टीकाकरण के दायरे में लाने का लक्ष्य पूरा करना है तो करीब प्रतिदिन 92 लाख डोज देने होंगे। मौजूदा औसत करीब 38 लाख है। इसके अलावा नए नए वैरिएंट पर टीकों का कितना असर होता है, यह भी देखना होगा। कुल मिलाकर, जितना हो सके टीकाकरण में तेज़ी ज़रूर लाई जाए, लेकिन बचाव का सबसे भरोसेमंद तरीक़ा अभी भी मास्क पहनना, दूरी बनाए रखना और सावधानी बरतना ही माना जा रहा है।

संकट में बचपन-उपाय क्या है?

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

महामारी के दौरान दुनिया में एक और संकट गहराया है। यह संकट बाल मज़दूरों को लेकर है। चिंताजनक की बात यह है कि इस डेढ़ वर्ष में दुनिया में बाल श्रमिकों की तादाद बढ़ गई है। हाल में संयुक्त राष्ट्र बाल विकास कोष (यूनिसेफ) ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि वर्ष 2016 में दुनियाभर में करीब साढ़े नौ करोड़ बाल मज़दूर थे। यह संख्या अब बढ़कर सोलह करोड़ तक जा पहुंची है। चार वर्ष में बाल श्रमिकों की तादाद में यह वृद्धि डेढ़ गुने से भी अधिक है। इतना ही नहीं, अब बड़ा ख़तरा यह भी है कि अगले वर्ष के अंत तक महामारी के कारण एक करोड़ से ज़्यादा और बच्चे बाल श्रम में झोंक दिए जाएंगे। अगर पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा का दायरा नहीं बढ़ाया गया तो इस आंकड़े को बढ़ने से कोई नहीं रोक नहीं जाएगा।

यूनिसेफ के अनुमान के मुताबिक़ बाल श्रमिकों के मामले में भारत की स्थिति और भयावह होने की आशंका है। छह से चौदह वर्ष के बच्चे अपने परिवार की मदद के लिए स्कूल छोड़कर खेती और घरेलू कामों लग चुके हैं। ऐसे बच्चों में ज़्यादातर ग्रामीण और आदिवासी इलाकों के ही हैं। एक अनुमान के मुताबिक भारत में बाल मज़दूरों से ज़्यादा बच्चे ग्रामीण इलाकों में कृषि और खेतिहर मज़दूरी में लगे हैं लेकिन अब महामारी ने हालत और बिगाड़ दिए हैं। करोड़ों परिवार ग़रीबी की मार झेल रहे हैं। आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा के अभाव और घरेलू आय में कमी के कारण ग़रीब परिवारों के बच्चों को मजबूरी में काम करना पड़ रहा है। बालश्रम बच्चों को उन मूलभूत अधिकारों और आवश्यकताओं से वंचित करता है जिस पर उनका नैसर्गिक अधिकार होता है। साथ ही बालश्रम भौतिक, मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास को भी बाधित करता है।

बालश्रम विश्व में अब तक ऐसी स्थायी समस्या बन चुकी है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे लेकर वर्ष 1924 में पहल तब हुई, जब जिनेवा घोषणा पत्र में बच्चों के अधिकारों को मान्यता देते हुए पांच सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की गई थी। इसके चलते बाल श्रम को प्रतिबंधित किया गया, साथ ही बच्चों के लिए कुछ विशिष्ट अधिकारों की स्वीकृति दी गई थी। बाल मज़दूरी और शोषण के अनेक कारण हैं जिनमें ग़रीबी, सामाजिक मापदंड, वयस्कों और किशोरों के लिए अच्छेष कार्य करने के अवसरों की कमी, प्रवास जैसे कारक शामिल हैं। ये सब वजहें भेदभाव से पैदा होने वाली सामाजिक असमानताओं के परिणाम हैं। बाल मज़दूरी बच्चों से स्कूल जाने का अधिकार छीन लेती है और वे पीढ़ी दर पीढ़ी ग़रीबी के चक्रव्यूह से बाहर निकल नहीं पाते हैं। ज़ाहिर है, बच्चों की शिक्षा में बाल मज़दूरी शिक्षा में बहुत बड़ा अवरोध है। बाल तस्करी भी बाल मज़दूरी से अलग नहीं है जिसमें हमेशा ही बच्चों का शोषण होता है। ऐसे बच्चों को शारीरिक, मानसिक, यौन और भावनात्मक सभी प्रकार के उत्पीड़नों से गुज़रना पड़ता है। बच्चों को वेश्यावृत्ति की ओर धकेल दिया जाता है। कम और बिना पैसे मज़दूरी कराना, घरों में नौकर या भिखारी बनाने पर मजबूर करना बाल श्रम के ही उदाहरण है। दुनिया के कई देशों में तो बच्चों के हाथों में हथियार भी थमा दिए जाते हैं। बाल तस्करी बच्चों के लिए हिंसा, यौन उत्पीड़न और एचआइवी संक्रमण का ख़तरा पैदा करती है। कुल मिलाकर दुनियाभर में बच्चों पर संकट कहीं ज़्यादा व्यापक और गंभीर है।

प्रश्न है कि बालश्रम कैसे ख़त्म हो? जो कुप्रथा सदिया से चली आ रही है, उसे ख़त्म करना कोई आसान नहीं है। फिर दुनियाभर में तमाम कानून हैं जो बालश्रम को प्रतिबंधित करते हैं, जिनके तहत बाल मज़दूरी अपराध है। पर समस्या यह है कि इतने क़ानूनों के बावजूद यह संकट गहराता जा रहा है। इसका मूल कारण सरकारों के साथ समाज में बच्चों की उपेक्षा भी है इसीलिए बच्चों को बचपन बचाने की पहली ज़िम्मेदारी तो समाज और सरकार की ही है। भारत में बालश्रम निषेध के लिए अनेक क़ानून बनाए गए हैं। 1948 के कारखाना अधिनियम से लेकर दर्जनों प्रावधान हैं। बावजूद इसके बाल श्रमिकों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। ज़ाहिर है, क़ानून बेअसर साबित हो रहे हैं। इनकी अनुपालना में लापरवाही बरती जा रही है। सरकार इस मामले में बेपरवाह है। कुल श्रम शक्ति का पांच प्रतिशत बाल श्रम ही है। हैरानी की बात तो यह है कि भारत ने अभी तक संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार समझौते की धारा-32 पर सहमति नहीं दी है, जिसमें बाल मज़दूरी को जड़ से ख़त्म करने की बाध्यता शामिल हैं। वर्ष 1992 में संयुक्त राष्ट्र में भारत ने कहा था कि अपनी आर्थिक व्यवस्था को देखते हुए इस दिशा में रुक-रुक कर क़दम उठाएंगे, क्योंकि इसे एकदम नहीं रोका जा सकता। लेकिन तीन दशक बाद भी हमारा देश में बाल मज़दूरी बढ़ रही है तो इसकी ज़िम्मेदार अब तो सरकारी नीतियां ही हैं। इतना ही नहीं, बाल श्रम क़ानून के संशोधन में भी थोड़ी नरमी देखने को मिल रही है।

बाल श्रम रोकने के लिए ठोस क़दम उठाने की ज़रूरत है। इसमें हम लोकतंत्र की सबसे छोटी इकाई पंचायत की भूमिका को बढ़ा सकते हैं। चूंकि भारत में लगभग अस्सी प्रतिशत बालश्रम ग्रामीण क्षेत्रों में होता है, इसलिए बालश्रम में कमी लाने और धीरे-धीरे इसे ख़त्म करने की ज़िम्मेदारी पंचायतों पर डाली जानी चाहिए। पंचायतें समें प्रमुख भूमिका निभा सकती है इसके लिए पंचायतों को बाल श्रम के दुष्परिणामों के बारे में जागरुकता पैदा करनी होगी। ऐसा माहौल तैयार करना होगा जहां बच्चों को काम न करना पड़े और वे स्कूलों में दाख़िला लें। इसका भी आंकलन करते रहना होगा कि बच्चों को स्कूलों में पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध हैं या नहीं। पंचायतों को भी अधिकार दिए जाने की ज़रूरत है कि वे बालश्रम करवाने पर जुर्माना लगा सकें और उसके विरुद्ध क़ानूनी कार्रवाई शुरू कर सकें। गांवों में बालबाड़ी और आंगनबाड़ियों को भी इसके लिए सक्रिय रखने की ज़रूरत है। बालश्रम को रोकने में इनकी भी भूमिका कारगर हो सकती है।

कोरोना काल में ग़रीबी बढ़ी है। ऐसे में बच्चों को भी रोज़गार से लगाना ज़्यादातर परिवारों की मजबूरी बन गई है। लेकिन सरकारों और समाज के स्तर पर प्रयास करके इसे रोका जा सकता है। जब तक समाज मुखर नहीं होगा, बाल मज़दूरी जैसी समस्या से निपटना आसान नहीं होगा। शहरों, महानगरों तो घरेलू कामकाज के लिए लोग दिनभर के लिए काम के लिए घरों में कम आयु के बच्चों को रखना पसंद करते हैं क्योंकि ये मजबूरी के मारे होते हैं और बिना किसी हक़ की मांग के काम करने को तैयार हो जाते हैं। ऐसे में यह सामाजिक बुराई शहरों में ज़्यादा बढ़ रही है। इसे समाज ही ख़त्म कर सकता है। अब बालश्रम के मसले पर प्रश्न और समाधान के बीच असंतुलन की गहरी होती खाई को पाटने की ज़रूरत है। कोरोनाकाल में अनाथ हुए बच्चों का आंकड़ा भयभीत करने वाला है। इस डेढ़ वर्ष में करीब तीन लाख बच्चे अनाथ हो गए है जिनके अभिभावकों में से किसी एक या दोनों की महामारी से मौत हो गई। पंडित जवाहर लाल नेहरु कहते थे कि बच्चे देश का भविष्य होते हैं, इसलिए इनके प्रति हर नागरिक को जागरुक होना चाहिए ताकि एक सुंदर और सुदृढ़ देश का निर्माण हो सके।

कोरोना काल में ग़रीबी बढ़ी है। ऐसे में बच्चों को भी रोज़गार से लगाना ज़्यादातर परिवारों की मजबूरी बन गई है। लेकिन सरकारों और समाज के स्तर पर प्रयास करके इसे रोका जा सकता है। जब तक समाज मुखर नहीं होगा, बाल मज़दूरी जैसी समस्या से निपटना आसान नहीं होगा। शहरों, महानगरों तो घरेलू कामकाज के लिए लोग दिनभर के लिए काम के लिए घरों में कम आयु के बच्चों को रखना पसंद करते हैं क्योंकि ये मजबूरी के मारे होते हैं और बिना किसी हक़ की मांग के काम करने को तैयार हो जाते हैं। ऐसे में यह सामाजिक बुराई शहरों में ज़्यादा बढ़ रही है।

ब्राह्मणों को मायावती से जोड़ पाएंगी खुशी दुबे?

उत्तर प्रदेश में अगले वर्ष की शुरुआत में होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनज़र वहां ब्राह्मण वोट के लिए राजनीतिक दलों के बीच घमासान चल रहा है। बसपा चीफ मायावती 2007 दोहराना चाहती है। 2007 के चुनाव में बसपा बहुत बड़े बहुमत के साथ सत्ता में आई थी और ब्राह्मणों ने दलितों के साथ मिलकर बसपा को वोट किया। सतीश मिश्र इस 'सोशल इंजीनियरिंग' के हीरो माने गए थे। करीब 10 वर्ष से यूपी में सत्ता से बाहर चल रही बीएसपी एक बार फिर ब्राह्मण कार्ड खेल रही है। सभी मण्डल मुख्यालयों पर ब्राह्मण सम्मेलन आयोजित करने का फैसला किया गया है, शुरुआत अयोध्या से की गई है। लेकिन इन सबके बीच बसपा ने जो एक और दांव चला है और जिसको लेकर सबसे ज़्यादा चर्चा है, वह यह है कि खुशी दुबे को जेल से बाहर लाने के लिए सतीश मिश्र उसका केस लड़ेंगे।

कौन हैं खुशी दुबे : एक वर्ष पहले यूपी में बिकरू कांड हुआ था। गैंगस्टर विकास दुबे को गिरफ्तार करने उसके गांव बिकरू पहुंची पुलिस को विकास दुबे ने अपने सहयोगियों की मदद से घेरकर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी थी। मौक़े पर ही आठ पुलिसकर्मी मारे गए थे और बाकी को अपनी जान बचाकर भागना पड़ा था। अगले रोज़ पुलिस ने जवाबी कार्रवाई शुरू की, उसमें विकास दुबे के गैंग के भी लोग एनकाउंटर में मारे गए थे, इनमें विकास दुबे का शूटर अमर दुबे भी शामिल था। खुशी दुबे अमर दुबे की पत्नी है। बिकरू कांड से डेढ़ सप्ताह पहले ही उसकी अमर दुबे से शादी हुई थी। बाद में पुलिस ने खुशी दुबे के ख़िलाफ़ गंभीर धाराओं के तहत मुक़दमा दर्ज करते हुए उसे गिरफ्तार कर लिया था। खुशी दुबे करीब एक साल से जेल में है। उसके ख़िलाफ़ इतने संगीन आरोप हैं कि उसे ज़मानत नहीं मिल पा रही है। कोरोना की दूसरी लहर में उसका तबियत ख़राब हो गई थी। ख़राब स्वास्थ्य के आधार पर भी उसे ज़मानत नहीं मिली।

खुशी दुबे को लेकर सहानुभूति

बाक़ी पेज 11 पर

ख़ास ख़बरें

अमेरिका ने 24 रूसी राजनयिकों को देश छोड़ने को कहा

वाशिंगटन : अमेरिका और रूस के राष्ट्रपतियों के शिखर सम्मेलन के बाद दोनों देशों के बीच तल्ख़ रिश्तों में आई कमी बाइडेन प्रशासन के एक आदेश के बाद फिर से तनाव में बदल गई है। अमेरिका ने रूस के 24 राजनयिकों को तीन सितंबर तक देश छोड़कर चले जाने का आदेश दिया है। यही नहीं बल्कि इनकी दूसरे राजनयिक भी रूसी दूतावास में तैयार नहीं हो सकेंगे क्योंकि इन्हें अमेरिकी वीज़ा नहीं मिला है।

भ्रष्टाचार मामले में येदियुरप्पा व उनके बेटे के खिलाफ़ नोटिस

बंगलूरु : कर्नाटक हाईकोर्ट ने आवासीय परियोजना में भ्रष्टाचार के मामले में पूर्व सीएम बीएस येदियुरप्पा उनके बेटे एवं भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष बीवाई विजयेन्द्र, उनके परिवार के सदस्यों, पूर्व मंत्री एसटी सोमशेखर के ख़िलाफ़ नोटिस जारी किया है। जस्टिस एस. सुनील दत्त यादव की एकल पीठ ने एक याचिका पर नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

पेगासस मुद्दे पर एडिटर्स गिल्ड पहुंचा सुप्रीम कोर्ट एसआईटी जांच की मांग

पेगासस जासूसी मामले को लेकर अब एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया ने भी सुप्रीम कोर्ट का रुख़ किया है। गिल्ड ने मामले की विशेष जांच दल (एसआईटी) द्वारा जांच कराने की मांग की है। गिल्ड ने केन्द्र को यह निर्देश देने की मांग की है कि वह निगरानी के लिए स्पाइवेयर तैनात करने के लिए विदेशी कंपनियों के साथ किए गए अनुबंधों का विवरण दे। साथ ही यह जानकारी भी मुहैया कराया जाना चाहिए कि किन लोगों के ख़िलाफ़ इस तरह के स्पाइवेयर का इस्तेमाल किया गया था।

पूर्वी लद्दाख के गोगरा हाइट्स से पीछे हटेंगे भारत व चीन के सैनिक

पूर्वी लद्दाख में भारत और चीन के बीच सैन्य गतिरोध दूर करने की दिशा में काफी दिनों बाद सकारात्मक संकेत मिले हैं। दोनों देशों ने अपनी सेनाओं को गोगरा इलाके से पीछे हटाने पर सहमति जताई है। भारत और चीन के बीच 12वें दौर की कोर कमांडर स्तर की बातचीत में दोनों पक्ष पट्रोलिंग पाइंट-17ए से पीछे हटने के लिए तैयार हुए हैं। पूर्वी लद्दाख सेक्टर में इस पेट्रोलिंग पाइंट को लेकर दोनों देशों में गतिरोध बना हुआ था। सूत्रों ने बताया कि दोनों पक्षों में पेट्रोलिंग पाइंट-17ए से पीछे हटने को लेकर समझौता हुआ है। पट्रोलिंग पाइंट 17-ए को गोगरा के नाम से जाना जाता है। इससे पहले इस वर्ष फरवरी में दोनों पक्ष पैंगोंग झील से अपने सैनिकों को पीछे हटाने पर सहमत हुए थे।

माहे मोहर्रम की फज़ीलत

माहे मुहर्रम का महीना आ चुका है। लोग इस महीने को तरह तरह के दुनियावी और ग़लत तरीक़ों के चलन से जोड़कर देखते हैं लेकिन जो लोग सच्चाई जानते हैं वो मानते हैं कि मोहर्रम का महीने बड़े अदब और एहतराम का महीना है। सूरह तौबा के पांचवीं रुकू में अल्लाह फरमाता है, 'महीनों की गिनती बारह महीने ठहर गई, इन चार में अदब के महीने है, यही सीधा दीन है तो इन अदब के महीनों में अपनी जानों पर जुल्म न करो। अदब के चार महीनों के नाम इस तरह है, रजब, जीक़ादा, ज़िलहिज्जा और मुहर्रम। माहे मोहर्रम की फज़ीलत इब्तदाए दुनिया से है। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम रजब की दसवीं तारीख़ को कश्ती पर सवार हुए थे और कश्ती महीनों पानी पर तैरती रही और मुहर्रम की दसवीं यानि आशूरा को जूदी पर ठहरी। हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ मक्का शरीफ से हिजरत फरमा कर जब मदीना शरीफ़ से तशरीफ ले गय तो वहां देखा कि यहूदी लोग आशूरा के दिन रोज़ा रखते हैं दरयाफ़्त करने पर पता चला कि यह अच्छा दिन है इस दिन बनी इस्राईल को फिरऔन से निजात मिली थी तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने रोज़ा रखा था। अल्लाह के नबी सल्ल॰ ने भी आशूरा के दिन रोज़ा रखा और लोगों को भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया। इसी मुहर्रम के महीने में सैयदना हज़रत इमाम हुसैन आली मक़ाम और आपके जानिसारों ने जामे शहादत पीकर इस्लाम को ज़िन्दगी बख़्शी।

क़त्ले हुसैन असल में मर्गे यज़ीद है इस्लाम ज़िन्दा होता है हर कर्बला के बाद। अरब में दो कबीले थे एक बनी हाशिम और दूसरा बनी उमैया। ख़ानदाने रिसालत का ताल्लुक़ बनी हाशिम से है और हज़रत माविया और यज़ीद का बनी उमैया से। हिजरी 60 में जब माविया की वफ़ात हो गयी तो उनका बेटा यज़ीद गद्दीनशीन हुआ और लोगों से बेअत लेनी शुरू की, हज़रत इमाम हुसैन ने यज़ीद के हाथों बेअत होने से इंकार कर दिया और मक्का शरीफ़ चले आये। यज़ीद हक़ पर नहीं था उनकी हुकूमत इस्लामी क़ायदे क़ानूनों के ख़िलाफ़ थी ऐसे शख़्स के हाथों हज़रत इमाम हुसैन क्योंकर बेअत होते। जब आप मक्का चले गये तो कूफ़ावासियों (इराक़) ने आपस में तय किया कि वो सब हज़रत इमाम हुसैन के हाथ पर बेअत होंगे। लिहाज़ा इस सिलसिले में कूफ़ावासियों ने इमाम हुसैन के पास ख़त रवाना किया कि आप जल्द कूफ़ा तशरीफ ले आएं। अहले कूफ़ा आपके मुनतज़िर हैं और हम सब आपकी बेअत के लिए तैयार हैं इस तरह कूफ़ा वालों के लिए तकरीबन बारह की तादाद में ख़त आये तब इमाम हुसैन ने अपने चचाज़ाद भाई हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील को सही हालात का जायज़ा लेने के लिए कूफ़ा भेजा वहां 80 हज़ार की तादाद में कूफ़ियों ने इमाम हुसैन के साथ होने की बात कही और उनके हाथ पर बेअत की। पूरी तरह इत्मीनान कर लेने के बाद मुस्लिम बिन अक़ील ने इमाम आली मक़ाम के नाम ख़त लिखा कि आप कूफ़ा तशरीफ लें आएं यहां के शिया आपकी बेअत के लिए तैयार हैं और यहां कोई ख़तरा नहीं है।

हज़रत मुस्लिम के ख़त रवाना करने के बाद ही कूफ़ियों ने बेवफाई शुरू कर दी और हज़रत मुस्लिम को पत्थरों से मारकर शहीद कर दिया, इमाम हुसैन आली मक़ाम कूफ़ा के लिए चल चुके थे रास्ते में हज़रत मुस्लिम की शहादी की ख़बर सुनी तो दिल को बेहद सदमा हुआ। काफ़िला आगे बढ़ा और हुरबिन यज़ीद की आमद हुई, उसने हुसैन इब्ने ज़याद के हुक्म पर आली मक़ाम और आपके जानिसारों को कर्बला नाम के उजाड़ मक़ाम पर उतरने के लिए मजबूर किया इब्ने ज़याद के हुक्म पर पानी पर पहला लगा दिया गया कि इमाम आली मक़ाम और आपके साथियों तक पानी न पहुंचने पाये। आपके उमरू बिन साद से मुलाक़ात की और सुलहकुन तीन शर्त रखी कि मुझे वहीं लौट जाने दो जहां से आया हूं, मुझे खुद यज़ीद से अपना मामला तय कर लेने दो, मुझे मुसलमानों के किसी सरहद पर भेज दो वहां के लोगों पर जो गुज़रती है वही मुझ पर गुज़रेगी। आपने अहलेकूफ़ियों से ख़िताब किया कि तुम लोगों ने मुझको यहां आने पर मजबूर किया और लिखा कि हम बेअत करेंगे और आज तुम लोग बेवफाई कर रहे हो।

सन् 688 ई॰ में कर्बला के तपते सेहरा में सैयदुश्शोहदा सैयदना हज़रत इमाम हुसैन आली मक़ाम की शहादत और आपके जांनिसारों की कुर्बानियां और ख़ानदाने रिसालत की बहू-बेटियों का सब्र ओ इस्तक़ामत रहती दुनिया तक अज़ीम मिसाल है। कर्बला के मैदान में यज़ीद की इकतरफा जंग में नवासा-ए-रसूले खुदा और ख़ानदाने रसूले अक़्दस सल्ल॰ के सभी छोटे बड़े शहीद हो गये। सिर्फ इसलिए कि इस्लाम पर आंच न आने पाये।

अहले कूफ़ियों ने निहायत मक्कारी का सबूत दिया और निहायत ही बेरहमी और संगदिली के साथ ख़ानदाने रिसालत को कर्बला के तपते रेगज़ार में भूखा प्यासा शहीद कर दिया। खानदाने रसूले अक़्दस सल्ल॰ के 72 अज़ीज़ों के शहीद हो जाने के बाद कुल 12 की तादाद में लोग बचे थे जिनमें हज़रत ज़ैनुल आबिदीन को छोड़कर बाकी सब औरतें थीं हज़रत ज़ैनुल आबिदीन बीमार होने की वजह से नहीं लड़े थे। यज़ीदी लश्कर ने इन सबको बड़ी बेरहमी से गिरफ्तार कर लिया, खानदाने रिसालत के अज़ीज़ों की लाशें घोड़ों के पैरों तले रौंदी गयीं और फिर तमाम शहीदों के सिर काटकर नेज़ों में लगाकर जुलूस की शक्ल में यजीद बिन माविया तक पहुंचाये गये। सबसे पहले इमाम हुसैन आली मक़ाम का सिर इब्ने जयाद ने आपके सिर को बांस पर लगाकर जहरबिन कै़स के हाथ दमिश्क भेजा यज़ीद के पास।

सन् 688 ई॰ में कर्बला के तपते सेहरा में सैयदुश्शोहदा सैयदना हज़रत इमाम हुसैन आली मक़ाम की शहादत और आपके जांनिसारों की कुर्बानियां और ख़ानदाने रिसालत की बहू-बेटियों का सब्र ओ इस्तक़ामत रहती दुनिया तक अज़ीम मिसाल है। कर्बला के मैदान में यज़ीद की इकतरफा जंग में नवासा-ए-रसूले खुदा और ख़ानदाने रसूले अक़्दस सल्ल॰ के सभी छोटे बड़े शहीद हो गये। सिर्फ इसलिए कि इस्लाम पर आंच न आने पाये। हज़रत इमाम हुसैन आलीमक़ाम की शहादत दीन की फतह है, इंसानियत की जीत है, हक़ की जीत है। इस्लाम के बक़ा के लिए उम्मते रसूले अक़्दस सल्ल॰ की शिफ़ाअत के लिए हज़रत हुसैन और आपके जांनिसारों ने कुर्बानियां दी थीं। ❑❑

नूरे क़ुरआन

(सूरा अल्लैल नं॰ 92)

अनुवाद और व्याख्या : शैख़ुल हिन्द र.अ.

यह सूरा मक्का में उतरी इसमें इक्कीस आयतें हैं।

प्रारंभ करता हूं मैं अल्लाह के नाम से जो असीम कृपालु महादयालु है।

क़सम है रात की जब वह छा जाये और दिन की जब वह प्रकाशित हो जाये और उसकी जो उसने नर और मादा पैदा किए कि नि:संदेह तुम्हारी कमाई भिन्न-भिन्न है।

अर्थात् जिस प्रकार दुनिया में रात और दिन, नर और मादा अलग अलग एक दूसरे के विपरीत वस्तुयें पैदा की गई, तुम्हारे कार्य और प्रयत्न भी भिन्न और विपरीत हैं फिर उन विभिन्न कार्यों पर प्रत्यक्ष है कि प्रतिफल और परिणाम भी भिन्न होंगे, जिनका वर्णन आगे आता है।

सो जिसने दिया और अल्लाह से डरता रहा और भली बात को सच्चा जाना तो हम उसको धीरे-धीरे आसानी में पहुंचा देंगे।

अर्थात् जो व्यक्ति नेक रास्ते में माल ख़र्च करता है और हृदय में अल्लाह का भय रखता है और इस्लाम की भली बातों को सच जानता है और अल्लाह की शुभ सूचनाओं को ठीक समझता है, उसके लिए हम अपने स्वभाव के अनुसार नेकी का रास्ता आसान कर देंगे और परिणाम स्वरूप बहुत आसानी और राहत (सुख) के स्थान पर पहुंचा देंगे, जिसका नाम जन्नत है।

और जिसने नहीं दिया और अल्लाह से बेपरवाह रहा और भली बात को झूठ जाना तो हम उसको धीरे-धीरे सख़्ती में पहुंचा देंगे।

अर्थात् जिसने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न किया उसकी ख़ुशी और आख़िरत के सवाब (पुण्य) की चिंता न की और इस्लाम की बातों और अल्लाह के वादों को झुठलाया उसका हृदय प्रतिदिन संकीर्ण और सख़्त होता चला जाएगा। अच्छाई और भलाई करने की योग्यता समाप्त हो जायेगी अन्त में धीरे-धीरे अल्लाह की कठोर यातना का भागीदार बन जायेगा। अल्लाह का स्वभाव यही है कि अच्छे लोग जब नेक काम करते हैं और बुरे लोग जब बुरे काम करते हैं, तो दोनों के लिए वही रास्ता आसान कर दिया जाता है, जो उन्होंने भाग्य के आधार पर अपने इरादे और अधिकार से पसंद कर लिया।

और उसका माल उसके कुछ काम न आयेगा जब वह बर्बाद होने लगेगा।

अर्थात् जिस माल दौलत पर घमंड करके यह आख़िरत की ओर से बेपरवाह हो रहा था, वह तनिक भी अल्लाह के अज़ाब से बचा न सकेगा।

नि:संदेह मार्ग सुझा देना हमारा ज़िम्मा है और आख़िरत और दुनिया हमारे ही हाथ में है।

अर्थात् हमारी तात्विकता इसको नहीं चाहती कि किसी व्यक्ति को जबरन नेक या बद बनने पर विवश किया जाये, हां यह हमने अपने ऊपर ले लिया है कि सबको नेकी या बदी की राह सुझा दें और भलाई बुराई को भली-भांति खोल-खोलकर बयान कर दें। इसके पश्चात् जो व्यक्ति जो राह अपनायेगा दुनिया और आख़िरत में उसी के अनुसार उससे बर्ताव करेंगे।

तो मैं तुमको एक भड़कती हुई आग से डरा चुका हूं।

उस एक भड़कती हुई आग से संभवत: दोज़ख़ के उस भाग से तात्पर्य होगा, जो बड़े भारी अपराधियों और अभागों के लिए विशेष है।

उसमें वही बड़ा अभागा गिरेगा जिसने (सच्चे दीन को) झुठलाया और मुंह फेरा।

अर्थात् सदैव के लिए वही गिरेगा, फिर कभी निकलना नसीब न होगा।

और उससे ऐसा व्यक्ति दूर रखा जायेगा जो परहेज़गार है।

अर्थात् ऐसे लोगों को उसकी हवा तक भी नहीं लगेगी, साफ बचा दिये जायेंगे।

जो अपना माल हृदय को पवित्र करने के लिए देता है।

अर्थात् मन को गंदी बातों जैसे कंजूसी और लालच आदि से पवित्र करना उद्देश्य है, किसी प्रकार का दिखावा या सांसारिक लालच सम्मुख नहीं।

आप (स.) का बच्चों को उपहार देना

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न केवल बच्चों की दिलदारी और दिलजोई करते थे, उनके साथ खेलते, उनके खेल की खुद निगरानी फरमाते, उनको सलाम करने में पहल करते, बल्कि आप बच्चों को उपहार भी देते। खाने-पीने की चीज़ें उनको देते। हज़रत अबु हुरैरह से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पहला फल लाया जाता था तो आप फरमाते। ऐ अल्लाह हमारे लिए हमारे फलों में बरकत दे। फिर आप वह फल जो आपके पास मौजूद होता लड़कों में सबसे छोटे को दे देते।

हज़रत साइब बन यज़ीद कहते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा, मैं और मेरे साथ एक और लड़का आपके यहां दाखिल हुए तो आप अपने कुछ साथियों के साथ एक बर्तन में खजूर खा रहे थे, आपने हमें उस में से एक मुठी खजूर दी और हमारे सिर पर हाथ फेरा।

हजरत राफे बिन गिफारी कहते हैं कि मैं बचपन में अंसार खजूरों पर पत्थर मारता था। मुझे आपकी खिदमत में पेश किया गया। फरमाया कि कि ऐ लड़के (एक रिवायत में है कि आपने कहा बेटा!) तुम पेड़ पर संगबारी क्यों करते हो? मैंने कहा कि फल खाता हूँ।

आपने कहा कि अब सनगबारी मत करना और जो खुद नीचे गिर जाए वह खा सकते हो, फिर आपने मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा, ऐ अल्लाह उसका पेट भरदे।

पंजाब - सिद्धू को आगे कर होगी भविष्य की सियासत

पंजाब की राजनीति में पिछले कुछ दिनों से मची हलचल की ओर सभी राजनीतिक विश्लेषकों की नज़रें लगी हैं। पंजाब की सरदारी हासिल करने के लिए बार-बार दस जनपथ की ओर लगी नेताओं की कतार पर हो रहे मंथन से कुछ नेताओं को अमृत तो कुछ को विष मिलने की उम्मीद तो थी पर सबको थी पर किसके हिस्से में क्या आएगा यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा था। पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए महीनों से दिल्ली की दौड़ लगा रहे अमृतसर से विधायक नवजोत सिंह सिद्धू ने जिस तरह से अध्यक्ष पद की शपथ लेने से पहले कैप्टन के सामने ही हाथ को बल्ला बनाकर शॉट लगाया और शपथ लेते ही 'देहू शिवा वर मोहे..' की हुंकार लगाई, उससे यह स्पष्ट हो गया कि उन्होंने इस पूरी कवायद में पार्टी प्रोटोकॉल को नज़रअंदाज़ किया हो पर उनके साथ आलाकमान खड़ा है, जो उनके सारे बचपने को माफ करने को तैयार बैठा है या फिर मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह को बौना दिखाने की पूरी तैयारी में हैं।

इस घटनाक्रम में दस जनपथ की चुप्पी ज़रूरी राजनीतिक विश्लेषकों को हैरान किए हैं। वह भी तब, जब देश के नक्शे के ज़्यादातर हिस्सों में कांग्रेस का रंग ग़ायब हो रहा है और पार्टी आलाकमान भी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी या बाद में सोनिया गांध ी के कार्यकाल जितना मजबूत नहीं है, अब कमान युवाओं के हाथ में हैं और प्रयोग किए जा रहे हैं ताकि परिणमा सही आया तो बाकी जगह भी उसे ही इस्तेमाल कर नए समीकरण तैयार किए जा सकें। पंजाब में नवजोत सिंह सिद्धू के सिर पार्टी की प्रधानी के ताज के साथ-साथ चार और कार्यकारी अध्यक्ष बना वैसे भी कांग्रेस ने कई प्रश्न खड़े कर दिए हैं। विपक्षी शिरोमणि अकाली दल इसी मुद्दे पर कांग्रेस पर तंज़ कस रहा है। सिद्धू की ताजपोशी के तुरंत बाद ही शिअद नेता एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री हरसिमरत कौर बादल के ये बयान भी खूब वायरल हुए -'पंजाब कांग्रेस के चार-चार कार्यकारी अध्यक्षों की तैनाती की वजह सिद्धू की कमज़ोरी तो नहीं. .' या फिर पंजाब कांग्रेस के दो इंजन लग गए हैं, और दोनों ही एक दूसरे से विपरीत दिशा में गाड़ी खीचेंगे...तो सोचो गाड़ी की हालत क्या होगी.. जनता की तो बात ही छोड़िए।'

चार माह पहले ही पंजाब में 2022 के चुनाव में जीत आसानी से कांग्रेस की झोली में गिरने की बात कहने वाले राजनीतिक विश्लेषक भी अब कांग्रेस की जीत पर संशय जता रहे हैं। विशेषकर ताजपोशी के तुरंत बाद सिद्धू ने जिस तरह इधर- उधर बैठे कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के पांव छुए पर कैप्टर को पूरी तरह नज़रअंदाज़ किया, उससे लगता है कि आलाकमान भी 79 वर्ष के अनुभवी कैप्टन के बजाय 57 वर्षीय अपरिपक्व सिद्धू को तरजीह दे रहा है ताकि नेतृत्व की अगली लाइन तैयार की जा सके।

कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता चरण सिंह सपरा भी 'पंजाब की कमान किसके हाथ' का गोलमोल जवाब ही देते हैं कि कैप्टन अमरिंदर सिंह के भी और नवजोत सिंह सिद्धू के हाथ भी। इस बाबत पूछने पर उन्होंने कहा, दोनों ही कैप्टन हैं। दोनों की भूमिकाएं अलग अलग हैं पर लक्ष्य एक ही है। सिद्धू के पिछले दिनों के कुछ अपनी सरकार और मुख्यमंत्री पर निशाना साधने वाले बयानों पर भी वह यही कहते हैं कि सिद्धू में जो उतावलापन या खिलदड़पन है, वह अब काफी हद तक ठीक हो रहा है और पद मिलने के बाद तो धीरे-धीरे ठीक हो ही जाएगा।

जो भी हो, प्रदेश कांग्रेस के मौजूदा हालात देखकर ऐसा लगता है कि उफनते दूध पर पानी का छिड़काव कर इसे कुछ समय के लिए दबा दिया गया है। मगर नीचे की आंच जलती रही तो देर सबेर यह दूध छिटक कर बाहर गिरेगा, जिससे किनारों की भी सफाई की ज़रूरत पड़ेगी। पंजाब की प्रयोगशाला में हो रहा कांग्रेस का यह प्रयोग सफल रहा तो और भी राज्यों में इसका दोहराव होगा। पर अगर नाकामी मिली तो बड़ा नुकसान होने का अंदेशा भी है। ❑❑

उत्तराखंड - फेरबदल कर हरीश रावत पर दाँव चला कांग्रेस ने

उत्तराखण्ड में 2022 विधानसभा चुनाव से 07 माह पहले कांग्रेस में संगठन स्तर पर व्यापक फेरबदल किए गए हैं। कांग्रेस आलाकमान ने उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री कांग्रेस के दिग्गज नेता और पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री हरीश रावत को विधानसभा चुनाव की संचालन समिति का अध्यक्ष बनाकर उन्हें 2022 के विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री के चेहरे के रूप में उतारा है। भले ही कांग्रेस आलाकमान ने 2017 के विधानसभा चुनाव की तरह हरीश रावत को सीधे तौर पर मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित न किया हो परंतु यह संकेत दिया है कि वह 2022 के विध ानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी का मुख्यमंत्री का चुनावी चेहरा होंगे भले ही कांग्रेस विधान मंडल दल के नवनियुक्त नेता प्रतिपक्ष प्रीतम सिंह ने यह कहा कि 2022 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस मुख्यमंत्री पद के लिए कोई चेहरा नहीं उतारेगी और सामूहिक नेतृत्व में चुनाव होंगे और पार्टी सोनिया गांधी और राहुल गांधी के नाम पर चुनाव लड़ने की बात करता है। उत्तराखंड कांग्रेस में पार्टी आलाकमान ने जो फेरबदल किया उसमें हरीश रावत का पलड़ा कांग्रेस के प्रांतीय नेताओं पर भारी पड़ा है। प्रीतम सिंह प्रदेश अध्यक्ष पद से हटना नहीं चाहते थे। दरअसल 13 जून को नेता प्रतिपक्ष इंदिरा हृदयेश की मौत के बाद राज्य में कांग्रेस की राजनीति के समीकरण एकदम बदल गए। पार्टी आलाकमान ने नेता प्रतिपक्ष के पद पर प्रीतम सिंह को बिठाया और हरीश रावत को कहने पर गढ़वाल के ब्राह्मण नेता पूर्व विधायक गणेश गोदियाल को पार्टी का अध्यक्ष बनाया। साथ ही हरीश रावत को 2022 के विध ान सभा चुनाव जिताने की ज़िम्मेदारी भी सौंपी है और उन्हें चुनाव प्रचार समिति का अध्यक्ष बनाया गया। यह माना जाता है कि जिस नेता को जो राजनीतिक दल विधानसभा चुनाव में चुनाव प्रचार समिति की ज़िम्मेदारी सौंपते हैं वहीं मुख्यमंत्री का चेहरा होता है इसलिए हरीश रावत को 2022 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की ओर से मुख्यमंत्री का चेहरा माना जा रहा है। इसीलिए पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष भी हरीश रावत की पसंद गणेश गोदियाल को बनाया गया है। भले ही हरीश रावत और गोदियाल 2017 के विधानसभा चुनाव हार गए हों परंतु कांग्रेस आलाकमान ने इन दोनों हारे हुए नेताओं पर 2022 के विधानसभा चुनाव में दांव खेलना ही उचित समझा है। पार्टी आलाकमान ने उत्तराखंड के कांग्रेस के अन्य नेताओं की बजाए हरीश रावत पर ज़्यादा भरोसा किया है हरीश रावत ने पार्टी का राष्ट्रीय महामंत्री और पंजाब प्रभारी रहे हुए जिस तरह से पंजाब में कांग्रेस की समस्या को हल किया उससे हरीश रावत का कद पार्टी की राष्ट्रीय राजनीति में बहुत ज़्यादा बढ़ा है।

कांग्रेस आलाकमान 2022 के विध ानसभा चुनाव को देखते हुए विभिन्न 9 कमेटियों का गठन किया है जिनमें प्रदेश कांग्रेस कमेटी, कोर कमेटी, समनव्य कमेटी, चुनाव घोषणा पत्र कमेटी, चुनाव प्रबंधन कमेटी, चुनाव प्रचार कमेटी, प्रशिक्षण कार्यक्रम कमेटी, आउटरीच कमेटी और मीडिया कमेटी का गठन किया गया है। अधिकांश कमेटियों में हरीश रावत के समर्थकों का नाम ही शामिल है। वहीं प्रदेश कांग्रेस कमेटी मेंनेता प्रतिपक्ष प्रीतम सिंह

बाक़ी पेज 11 पर

पाँच राज्यों के चुनाव संघ के लिए चुनौती क्यों?

अगले वर्ष के प्रारंभ में 05 राज्यों के चुनाव होने हैं और इन 05 राज्यों में से चार राज्यों में भाजपा सत्ता में है जहां भाजपा के लिए सत्ता बचाने की लड़ाई हैं वहीं पंजाब में भाजपा को यह साबित करने की चुनौती है कि अकाली दल के बिना भी वह अच्छा कर सकती है। भाजपा के लिए ज़मीन तैयार करने में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अहम भूमिका निभाता है क्योंकि भाजपा संघ परिवार का ही राजनीतिक संगठन है। इन चुनावों में जितनी चुनौती भाजपा के सामने है उसी तरह संघ के सामने भी कई चुनौतियां हैं। संघ इन चुनौतियों से पार पाने में जुटा है और रणनीति तैयार करने के लिए लगातार मीटिंग्स भी चल रही हैं।

उत्तर प्रदेश ऐसा राज्य हैं जहां सबकी नज़रें लगी हैं क्योंकि यह सबसे बड़ा राज्य ही नहीं बल्कि यहां जीत या हार का राजनीतिक संदेश दूर तक जाता है। यूपी की योगी आदित्यनाथ सरकार पर कोरोना की दूसरी लहर में अव्यवस्था के आरोप लगे हैं। सिर्फ विरोधियों ने ही नहीं बल्कि भाजपा के भीतर से भी प्रश्न उठने लगे। सोशल मीडिया में भी जमकर सवाल है। ऐसे में चुनाव में भाजपा के पक्ष में माहौल तैयार करना संघ के लिए भी चुनौती है। हालांकि इसकी कोशिश में संघ जुटा हुआ है। संघ के कार्यकर्ता लोगों से संपर्क कर रहे हैं साथ ही संघ ने कोरोना की तीसरी लहर की तैयारी के लिए हेल्थ वॉलंटियर्स तैयार करने का अभियान शुरू किया है। इसके ज़रिए ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचने की कोशिश की जा रही है ताकि सरकार के ख़िलाफ़ जो भी माहौल बना है उसे ठीक किया जा सके। इसके साथ ही किसान आंदोलन के असर के बारे में भी देखा जा रहा है। वैसे संघ और भाजपा के लोगों का कहना है कि किसान आंदोलन का जितना भी असर है वह पश्चिमी उत्तर प्रदेश में है। इसलिए यहां के लिए अलग तरह से रणनीति बनानी होगी। किसान आंदोलन की वजह से भाजपा सत्ता वापसी की उम्मीद पर नकारात्मक असर न पड़े इसलिए भी संघ को काम करना होगा। साथ ही यूपी में हमेशा से ही जाति समीकरण का असर रहा है। संघ लगातार इस कोशिश में रहता है कि हिंदू वोट न बंटे, जिससे भाजपा को फायदा हो।

उत्तराखण्ड में भाजपा दो बार अपने मुख्यमंत्री बदल चुकी है। अगर इसके बाद भी भाजपा सत्ता में वापसी नहीं कर पाई तो यह उसके लिए झटका होगा। उत्तराखंड में हर चुनाव में सत्ता बदलती रही है और इसे इस बार मात देने के लिए भाजपा के साथ ही संघ को भी मेहनत करनी पड़ेगी। पहाड़ों में पहले संघ का ज़्यादा प्रभाव नहीं था लेकिन 2014 के बाद संघ ने अपना काम बढ़ाया है और युवा भी संघ से जुड़ा हैं यहां चुनौती उत्तराखंड में भाजपा के भीतर की गुटबाज़ी को ख़त्म करने और बार-बार सीएम बदलने के वजह से जो प्रश्न उठ रहे हैं उनका संतोषजनक जवाब देने की भी है।

पंजाब में चुनौती खुद को साबित करने की है। यहां भाजपा को सिर्फ कांग्रेस और आप से ही नहीं बल्कि अब तक उसके सहयोगी रहे अकाली दल से भी मुक़ाबला करना है। नए कृषि क़ानूनों के विरोध में अकाली दल ने भाजपा से खुद को अलग कर लिया था। पहली बार भाजपा और अकाली दल अलग-अलग दल की जूनियर पार्टनर की तरह चुनाव लड़ती रही है लेकिन इस बार सभी 117 सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी कर रही है। भाजपा ने पिछला चुनाव 23 सीटों पर लड़ा था और तीन सीटें जीती थीं। संघ के लिए यहां चुनौती भाजपा को स्थापित करने की है।

गोवा और मणिपुर के किले बचाने हैं

गोवा में भाजपा की सरकार है और यहां कई मसलों पर संघ के पुराने लोग ही भाजपा से नाराज़ हैं। पिछले चुनाव से पहले तत्कालीन संघ चालक सुभाष वेलिंगकर ने भाजपा के ख़िलाफ़ मोर्चा खोल दिया था। विरोध प्रदर्शन भी हुए जिसके बाद संघ ने वेलिंगकर को संघ चालक के पद से हटा दिया। तब वेलिंगकर ने अलग गोवा प्रांत संघ बना लिया और गोव सुरक्षा मंच नाम से राजनीतिक दल बनाकर भाजपा के ख़िलाफ़ चुनाव भी लड़ा। हालांकि इसका कोई विशेष असर हुआ नहीं। चुनाव के बाद गोवा प्रांत संघ को भंग कर दिया गया और उसकी जगह पर भारत माता की जय नाम से संगठन बनाया गया है। वेलिंगकर ने अब चुनावी राजनीति से खुद को अलग कर लेने की बात कही है लेकिन उनका अब भी कहना है कि गोवा में भाजपा को सबक़ सिखाना है। एक वक्त में संघ के ही रहे लोगों की नाराज़गी का असर भी यहां संघ को देखना है। मणिपुर में भी सत्ता में वापसी के लिए भाजपा और संघ रणनीति बनाने में जुटे हैं। संघ ने कुछ दिनों पहले भाजपा के साथ समन्वय करने वाले प्रचारक का दायित्व भी बदला है। संघ के सीनियर प्रचारक कृष्ण गोपाल भाजपा और संघ के बीच समन्वय का काम देखते थे लेकिन अब संघ ने यह ज़िम्मेदारी सह-सरकार्यवाहक अरुण कुमार को दी है। एक सीनियर प्रचारक ने कहा कि संघ में नई टीम तैयार की जा रही है जिसमें तुलनात्मक रूप से युवाओं को ज़्यादा ज़िम्मेदारी दी जा रही है। संघ और भाजपा के बीच समन्वय का काम देख रहे संघ प्रचारक अरुण के सामने भी इन पांचों राज्यों के चुनाव भाजपा के पक्ष में माहौल तैयार करने और फीडबैक जारी करने की बड़ी ज़िम्मेदारी है। ❑❑

सिमोन का बीच खेल से हटकर वापसी करना

अमेरिकी जिम्नैस्ट सिमोन बाइल्स का तोक्यो ओलंपिक्स में महिला जिम्नैस्टिक्स टीम इवेंट के बीच से हट जाना सिर्फ अमेरिका ही नहीं, दुनियाभर में मौजूद उनके प्रशंसकों को निराश कर गया। जिस परफार्मेस में उन्हें हवा में ढाई चक्कर लगाने थे, उसमें वे डेढ़ ही चक्कर लगा पाई और मैट पर उनकी लैंडिंग भी काफी बेढंगी सी रही। लेकिन ऐसे अवसर खिलाड़ी के खेल जीवन में आते हैं ओलंपिक भावना गिरकर उठने की ताईद करती है, लिहाज़ा उम्मीद की जा रही थी कि आगे की परफार्मेसेज और इवेंटस में वे अच्छा करेंगी। लेकिन सिमोन ड्रेसिंग रूम से रोती हुई लौटी और मीडिया के सामने अपने मानसिक स्वास्थ्य का हवाला देते हुए आगे परफार्म न करने की बात कही।

ध्यान रहे, सिमोन बाइल्स आज भी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ जिम्नैस्ट हैं और रियो ओलंपिक्स में जीते गए चार स्वर्ण के अलावा भी विश्वस्तरीय प्रतियोगिताओं के इतने स्वर्ण पदक उनके पास मौजूद हैं, जितने आज तक किसी भी महिला या पुरुष जिम्नैस्ट के हिस्से नहीं आए हैं। खेलों की दुनिया में उनकी लगभग वैसी ही पौराणिक हैसियत बन चुकी हैं जैसी जेसी ओवंस, अबेबे बिकिला, जिम थोर्प और सर्जेइ बुबका जैसे धुरंधरों की मानी जाती रही है। ऐसी खिलाड़ी का मानसिक स्वास्थ्य के आधार पर खेल से हट जाना दुनिया के लिए एक धक्के का सबब तो है ही लेकिन इसका सकारात्मक पक्ष यह है कि दुनियादारी के नज़रिये में आया एक बड़ा बदलाव इसमें परिलक्षित हो रहा है।

भारत में कोई आज भी अपने मानसिक स्वास्थ्य को लेकर चर्चा करे तो उसके दोस्त मित्र और अभिभावक उसे चुप कराने का प्रयास करते हैं। पिछले कुछ सालों में मनोचिकित्सकों से संपर्क करने का चलन बढ़ा है। लोग इस बारे में आपस में भी कुछ बातचीत कर लेते हैं। लेकिन इसे फुरसत की चीज़ ही माना जाता है। साइक्याट्रिस्ट के यहां से लौटने के बाद मरीज़ के परिजनों का आग्रह डिप्रेशन और एंग्जाइटी को शुगर या ब्लड प्रेशर क तरह लेने का होता है, जो पूरी तरह ठीक भले न हो, बस नियंत्रण रखा जा सके तो भी जीवन की गुणवत्ता ज्यों की त्यों बनी रहती है।

सिमोन बाइल्स का फैसला हमें मानसिक स्वास्थ्य के प्रश्न को एक बड़े फलक पर देखने के लिए प्रेरित करता है। सिमोन अपना खेल जारी रख सकती थीं। तोक्यो ओलंपिक में महिला जिम्नैस्टिक्स की कई इवेंट्स अभी उनका इंतज़ार कर रही थीं। लेकिन जिम्नैस्टिक्स एक हाई रिस्क खेल है और इतने ऊंचे लेवल पर प्रदर्शन करते हुए अगर एक बार खिलाड़ी के मन में हिचक पैदा हो जाए तो उसके चोटिल होने की आशंका बढ़ जाती है। 2008 के पेइचिंग ओलंपिक में विश्व रिकॉर्डधारी हर्डल रेसरल ल्यू श्यांग के साथ ठीक ऐसा ही हुआ था। अश्वेत नस्ल के एकछत्र दबदबे वाले इस खेल में शांघाई के रहने वाले इस धावक ने असाधारण उपलब्धियां हासिल की थीं। लेकिन ट्रैक पर उतरने के बाद ल्यू शंयाग ने पिस्टल दगने से पहले ही एक फाल्स स्टार्ट ले ली और इस क्रम में उसके टखने की कोई ऐसी चोट उभर आई, जो उसे याद भी नहीं थी नतीजा यह कि उसका कैरियर ही ख़त्म हो गया।

पीछे जाएं तो इस जिम्नैस्ट का जीवन काफी संकटों से भरा रहा है। अश्वेत पृष्ठभूमि की सिमोन बाइल्स अपने चार भाई-बहनों में तीसरे नंबर की हैं उनके माता पिता बच्चों को पैदा करने के बाद ही अलग हो गए और मां नशे की गिरफ्त में आकर जेल के भीतर होती रहती थीं। चारों बच्चे अनाथालय में पल रहे थे कि तभी उनके नाना ने सोचा कि क्यों न इन बच्चों को पाल लिया जाए। उन्होंने दो बच्चों को पालने का आग्रह अपनी बहन से किया और दो को अपने पास रख लिया। बाद में बच्चों को गोद लेकर वे और उनकी पत्नी कानूनी तौर पर इनके माता-पिता बन गए। बाइल्स उन्हीं का टाइटल है।

एक इंटरव्यू में सिमोन बाइल्स ने क़बूल किया कि बचपन की उनकी यादें सिर्फ भूख और भय की हैं। परिवार क्या होता है यह उन्होंने सबसे पहले छह वर्ष की आयु में पहुंचकर जाना। इसके कुछ ही वर्ष बाद बतौर जिम्नैस्ट उनकी ख्याति अमेरिका में फैलने लगी और मात्र सोलह वर्ष की आयु में उन्होंने वर्ल्ड ऑलराउंड टाइटल जीत लिया और हां, जिम्नैस्टिक्स में उनका आना भी उनके रॉनल्ड बाइल्स परिवार से जुड़ने का ही नतीजा है। रॉनल्ड और उनकी पत्नी नेली एक जिम चलाते है, जिसमें उनकी गोद ली हुई दोनों बच्चियों ने आने के साथ ही प्रैक्टिस शुरू कर दी थी। 2016 के रियो ओलिपिंक्स में झंडे गाड़ने से पहले सिमोन बाइल्स ने ओलिपिंक्स समिति को बता दिया कि उन्हें एडीएचडी (अटेंशन डेफिसिट/ हाइपरऐक्टिवटी डिसऑर्डर) है और वे इसकी दवा खाती हैं। बात में यह बात उन्होंने बाक़ायदा मीडिया को भी बताई। ऐसी बीमारी होने के बावजूद वे अपने खेल को यहां तक ले आई हैं, इससे उनकी असली ताक़त का पता चलता है। दुनिया सिमोन बाईस का नाम जिम्नैस्टिक्स में उनके प्रदर्शन से जोड़कर लंबे समय तक लेती रहेगी, लेकिन उतनी ही बड़ी भूमिका उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य के प्रश्न को कलंक मुक्त करने में भी निभाई। हमें भी जितनी खुशी किसी को चैंपियन बनते देखकर होती है, उतनी ही उसे स्वस्थ देखकर होनी चाहिए।❑❑

कोरोना वैक्सीन लगाने के बाद युवाओं और बुज़ुर्गों में हो रहे हैं अलग-अलग साइड-इफेक्ट्स

कोरोना महामारी से छुटकारा पाने के लिए वैश्विक स्तर पर वैक्सीनेशन का अभियान चलाया जा रहा है। भारत में भी प्रत्येक के हर छोटे-बड़े इलाक़े में लोगों को कोरोना वैक्सीन का डोज दिया जा रहा है हालांकि वैक्सीनेशन के बाद लोगों को अलग अलग तरह के साइड इफेक्ट्स हो रहे हैं लेकिन ये साइड इफेक्ट्स ऐसे बिल्कुल भी नहीं है जिनकी वजह से वैक्सीन न ली जाए। कोरोना वैक्सीन लगाने के बाद बहुत ही साधारण से साइड इफेक्ट्स दिखाई दे रहे हैं जिनमें शरीर में भारीपन महसूस होना और बुख़ार होना शामिल हैं। आईये जानते हैं इसके बारे में :-

हर व्यक्ति में अलग साइड इफेक्टस क्यों

कोविड वैक्सीन लगाने के बाद होने वाले साधारण से प्रभाव को इफ्लेमेटरी रिएक्शन कहा जाता है। यही रिएक्शन व्यक्ति की आयु, लिंग और अलग-अलग वैक्सीन की वजह से भिन्न हो सकते हैं। ऐसा कहा जा रहा है कि वैक्सीन के रिएक्शन युवाओं पर अधिक हो रहे हैं, जबकि मध्यम आयु और अधिक आयु के लोगों पर यह कम दिखाई दे रहे हैं। शोधकर्ता तेज़ी से इस बारे में जानकारी हासिल करने में जुटे हैं कि वैक्सीनेशन का प्रभाव हर व्यक्ति पर अलग-अलग क्यों दिखाई दे रहा है। विशेषकर से 45 वर्ष की कम आयु की महिलाओं पर वैक्सीनेशन का प्रभाव ज़्यादा दिखाई दे रहा है। इसके बाद यू.के. के प्रमुख विश्वविद्यालय में हाल ही में वैक्सीनेशन के होने वाले प्रभावों को लेकर कुछ परीक्षण किए गए हैं। इन परीक्षणों से पता चलता है कि आख़िर किस आयु के लोगों पर वैक्सीनेशन के रिएक्शन सबसे अधिक दिखाई दे रहे हैं।

बुज़ुर्गों में दिखाई दे रहे हैं इस तरह के साइड इफेक्ट्स

व्यक्ति अपनी युवावस्था में एनर्जी से भरा रहता है। इस समय शरीर का इम्यून सिस्टम भी अधिक मज़बूत होता है। वही आयु के साथ इसकी क्षमता कम हो जाती है और इसका प्रतिक्रिया करने का तरीक़ा भी धीमा हो जाता है। ऐसा ही कुछ वैक्सीन लगाने के बाद होता है। वैक्सीनेशन के बाद इम्यून सिस्टम के कमज़ोर होने के वजह से बुज़ुर्गों में कम साइड इफेक्टस देखने को मिल रहे हैं। यही कारण है कि युवाओं में वैक्सीन के बाद रिएक्शन थोड़ा ज़्यादा दिखाई दे रहा है और बुज़ुर्गों में रिएक्शन कम है। आपको बता दें कि 65 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों पर किए गए ट्रायल इसी बात को प्रमाणित करते हैं। शोधकर्ता बताते हैं कि अधिक आयु के लोगों पर जो रिएक्शन दिख रहे हैं उनमें दर्द होना, शरीर लाल हो जाना, सूजन होना और थकान महसूस होना शामिल है। आपको बता दें कि बुज़ुर्गों में पोस्ट वैक्सीनेशन के बाद बुख़ार की दिक्कत बहुत ही कम देखी गई है। फाइजर और मॉडर्ना के कोविड वैक्सीन का डोज लेने वाले बुज़ुर्गों में साइड इफेक्ट्स कम देखने को मिले हैं।

युवाओं पर दिखाई दे रहा है ऐसा प्रभाव

युवाओं की इम्युनिटी कम आयु में सबसे ज़्यादा होती है। ऐसे में 50 वर्ष की आयु से कम आयु के लोगों का इम्युन सिस्टम मज़बूत होता है और वह बीमारी के प्रति कम संवेदनशील होते हैं। हालांकि वैक्सीन के बाद उनके शरीर में इम्यून सिस्टम तेज़ से काम करता है जिसकी वजह से उनमें कुछ अधिक रिएक्शन देखने को मिल सकता है जो कि 65 वर्ष की आयु के लोगों में बेहद कम दिखाई दे रहे है। अब तक ऐसा देखा गया है कि युवाओं या कम आयु के लोगों में वैक्सीनेशन के बाद अधिक साइड इफेक्ट देखने को मिल रहे हैं जिनमें थकान, ठंड लगना, जोड़ों में दर्द और पीठ में दर्द शामिल हैं।

महिलाओं में जी घबराना और पेट दर्द जैसे लक्षण

वहीं अगर महिलाओं की बात करें तो वैक्सीनेशन के डोज के बाद उन्हें कुछ असामान्य लक्षण अनुभव हो सकते हैं, जिनमें जी घबराना, पेट में दर्द, ऐंठन और पीरियडस के दौरान अस्थायी परिवर्तन शामिल है। इसके अलावा युवाओं में कुछ अन्य लक्षण भी वैक्सीनेशन के बाद दिखाई दे रहे हैं जैसे दिल की धड़कन का बढ़ना, कमज़ोरी और गले में ख़राश। हालांकि इसका अर्थ यह नहीं है कि वैक्सीन की वजह से आपको किसी तरह के साइड इफेक्ट हो ही जाएं। हो सकता है कि आपको इसके रिएक्शन बेहद कम या फिर न के बराबर दिखाई दें। इन सभी लक्षणों का अर्थ है कि वैक्सीन अपना काम सही प्रकार कर रही है। बस इस बीच अपने वैक्सीन के बाद कुछ ऐसा न किया हो जिन्हें डॉक्टर करने से मना करते हैं।

वैक्सीन से एलर्जी हो जाए तो क्या करें

आपको किसी तरह की एलर्जी या अलग रिएक्शन हो इसके चांद बेहद कम हैं। वैक्सीन लगवाने के बाद एलर्जी या बड़े दुष्प्रभाव केवल तभी देखने को मिलते हैं, जब पहले से ही कोई व्यक्ति एलर्जी से पीड़ित हो या फिर वैक्सीन के अंदर मौजूद किसी चीज के प्रति संवेदनशील हो। अगर आपके साथ ऐसा हो तो डॉक्टर्स द्वारा बताई गई सारी बातों का पालन करें और ज़रूरत होने पर डॉक्टर की सलाह लें। रिसर्च में मौजूद एक्सपर्ट बताते हैं कि ऐसे लोग जिन पर कोविड वैक्सीन का अधिक रिएक्शन हुआ है किसी तरह की एलर्जी का अनुभव किया है, उनमें बेहोशी, अनियमित दिल की धड़कन, पसीना आना, पित्ती, त्वचा की प्रतिक्रिया जैसे लक्षण देखे गए हैं। अब अगर आपको किसी प्रकार की एलर्जी की समस्या है तो इसका निदान और उपचार आसानी से हो सकता है इसलिए किसी भी स्थिति में वैक्सीन का डोज ज़रूर लें और अगर कोई समस्या आपको पहले से है भी तो अपने डॉक्टर से बात ज़रूर कर लें।❑❑

शेष.... भारत अफग़ानिस्तान की...

इसे भी खुद को बदलना पड़ेगा।

पाकिस्तान के मामले में दबाव की गुंजाइश फिलहाल खत्म है। मोदी सरकार ने दुनिया में सुन्नी कट्टरपंथ के रक्षक सऊदी अरब की ओर भी हाथ बढ़ाया। दुश्मन के दोस्त से दोस्ती करने के सिद्धांत का पालन करते हुए यूएई की ओर भी दोस्ती का हाथ बढ़ाया है लेकिन पूरी संभावना यही है कि अफग़ानिस्तान वैसा इस्लामी अमीरात नहीं बनेगा जैसा तालिबान चाहता है। ऐसा हुआ भी, तो क्या भारत उसे तेल से रहित सऊदी अरब जैसा मान सकता है? एक और ऐसी ताक़त, जिससे इसलिए दोस्ती की जा सकती है कि वह दुश्मन की दोस्त है? यह संभव है और विवेकपूर्ण भी। इसके लिए सिर्फ भाजपा को घरेलू राजनीति में परिवर्तन करना होगा इसके लिए चुनौती ऐसा फ़ॉर्मूला तैयार करने की होगी, जो हिन्दू मुस्लिम ध्रुवीकरण के फार्मूले से भिन्न हो।❑❑

शेष.... ख़तरें में है मानव जाति....

जीवन को दूसरा बड़ा ख़तरा बढ़ते वैश्विक तापमान से है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में भी चेतावनी दी गई थी कि हमारे पास धरती को बचाने के लिए बहुत ही कम समय रह गया है। अगर हमने कार्बन उत्सर्जन रोकने के लिए सही क़दम नहीं उठाए तो 2050 तक इंसान भी विलुप्ति के कगार पर आ जाएंगे। हमारे पास ज़्यादा समय नहीं है। सभी देशों की सरकारों को अब मिलकर इसके लिए काम करना होगा। इस शोध से जुड़े शोधकर्ताओं ने मौजूदा स्थिति को देखते हुए अगले तीन दशक तक का एक परिदृश्य तैयार किया है। इसके मुताबिक अगले तीन दशकों में दुनिया की आधी से ज़्यादा आबादी और धरती के पैंतीस प्रतिशत हिस्से को वर्ष में बीस दिन जानलेवा गर्मी का सामना करना पड़ेगा। कृषि उत्पाद के पांचवें हिस्से में कटौती होगी। अमेजन की पारिस्थितिकीय तंत्र नष्ट हो चुका होगा। आर्कटिक जोन गर्मियों में बर्फ मुक्त हो जाया करेगा। समुद्र का जलस्तर आधे मीटर से भी ज़्यादा बढ़ जाएगा। एशिया की सभी बड़ी नदियों का पानी अधिक मात्रा में सूख जाएगा। एक अरब से ज़्यादा लोग अपने घर छोड़कर दूसरी जगह बसने को मजबूर हो जाएंगे और पृथ्वी का एक तिहाई हिस्सा रेगिस्तान में तब्दील हो सकता है। मानव अस्तित्व के लिए ये बड़ी चुनौतियाँ हैं।❑❑

शेष.... ब्राह्मणों को मायावती से....

की वजह यह कही जाती है कि उसकी शादी के महज़ डेढ़ सप्ताह के अंदर ही न केवल उसका पति मार दिया गया बल्कि उसको भी जेल में डाल दिया गया? यह प्रश्न भी उठा कि जिस लड़की की शादी महज़ डेढ़ सप्ताह पहले हुई हो, वह अपने पति के गैंग की सक्रिय सदस्य कैसे हो सकती है, उसने तो अभी पति के परिवार के सभी लोगों को सभी से पहचाना भी नही होगा। उसकी रिहाई की मांग भाजपा के अंदर भी उठ चुकी है। भाजपा एमएलसी उमेश द्विवेदी भी उसकी रिहाई की मांग को लेकर चिट्ठी लिख चुके हैं।

क्या फायदा हो सकता है बसपा को

दो बातों को समझना बहुत ज़रूरी है। एक यह कि यूपी में कास्ट फैक्टर अहम रोल निभाता है और दूसरा यह कि राजनीति में प्रतीकात्मक बातों का महत्व होता है। इसमें शक नहीं कि यूपी पॉलिटिक्स में ब्राह्मण बहुत महती भूमिका रखते हैं और खुशी दुबे को वहां किसी अपराधी की पत्नी की तरह नहीं 'मासूम ब्राह्मण लड़की' की तरह देखा जारहा है, जिसे अपनी ज़िन्दगी जीने का मौक़ा ही नहीं मिला। उसके पति की पृष्ठभूमि के चलते जब उसके साये के साथ भी लोग खड़े नहीं होना चाहते हैं तो बसपा का खुलकर उसकी मदद में आना वोटों के नज़रिये से मायावती के लिए फायदेमंद हो सकता है। लोग कह रहे हैं कि मायावती ने ऐसा कहने और करने की हिम्मत तो दिखाई।❑❑

शेष.... फेरबदल कर हरीश रावत....

के 3 समर्थकों रंजीत सिंह रावत, तिलक राज बेहड़ और भुवन कापड़ी को कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया है और हरीश रावत के कट्टर समर्थक प्रोफेसर जीतराम आर्य को कार्यकारी अध्यक्ष बनाया है। वही प्रदेश कोषाध्यक्ष पद पर हरीश रावत विरोधी खेमे के और प्रीतम सिंह समर्थक आर्यद्र शर्मा को कोषाध्यक्ष बनाया गया है।

भाजपा ने कुमाऊं में हरीश रावत की घेराबंदी करने के लिए पूर्व मुख्यमंत्री और महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी के खास राजनीतिक शिष्य पुष्कर सिंह धामी को मुख्यमंत्री तथा नैनीताल संसदीय क्षेत्र से सांसद अजय भट्ट को केन्द्रीय मंत्रीमंडल में रक्षा और पर्यटन जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों का राज्यमंत्री बनाया है। हरीश रावत का कहना है कि वे तो सोनिया गांधी और राहुल गांधी के सिपाही है। जैसा वे आदेश करेंगे वे उस आदेश का पालन करेंगे। उन्होंने कहा कि पहली ज़िम्मेदारी हम कांग्रेसियों की राज्य की जनता को भाजपा की कथित डबल इंजन सरकार से मुक्ति दिलाना है।❑❑

शेष.... मंज़र पस-मंज़र

कराने का प्रशंसनीय आग्रह किया गया है। वाकई भीख मांगने वाले और बेघर लोग भी कोविड-19 के संबंध में अन्य लोगों की तरह चिकित्सा सुविधाओं के हक़दार हैं। केन्द्र सरकार के साथ तमाम राज्य सरकारों को स्वास्थ्य और रोज़गार का दायरा बढ़ाना चाहिए, ताकि जो बेघर, निर्धन हैं, उन तक मानवीयता का एहसास पुरज़ोर पहुंचे।❑❑

शेष.... प्रथम पृष्ठ

की नीति लागू होगी। पिछले दिनों उन्होंने कहा, ''कुछ बुनियादी योजनाएं सबके लिए होंगी, लेकिन कुछ योजनाओं का लाभ सिर्फ दो बच्चों वाले परिवारों को मिलेगा।''

उत्तर प्रदेश हो या असम, दंडात्मक नीति का सबसे अधिक असर ग़रीबों और वंचितों पर होगा। यह तथ्य है कि जन्म दर वहां ज़्यादा है जहां सामाजिक-आर्थिक विकास कम हुआ, स्वास्थ्य सेवाएं पर्याप्त नहीं है। मुतरेजा कहती हैं ड्राफ्ट बिल के प्रावधान लागू हुए तो लैंगिक असमानता बढ़ेगी, स्त्री पुरुष अनुपात बिगड़ेगा और कुपोषण बढ़ेगा। स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाओं तक महिलाओं की पहुंच पहले से ही कम है। ऐसी नीतियों से वे और प्रभावित होंगी। असुरक्षित गर्भपात बढ़ेगा। एनएफएचएस-4 के अनुसार उत्तर प्रदेश में प्रत्येक 1000 लड़कों पर 995 लड़कियां हैं। लेकिन बीते पांच सालों के दौरान जनम के समय यह अनुपात काफी बिगड़ गया है। प्रत्येक 1000 लड़कों की तुलना में सिर्फ 903 लड़कियों ने जन्म लिया।

मुतरेजा एक और चिंताजनक तथ्य बताती हैं। उत्तर प्रदेश सरकार दशकों से पुरुष एवं महिला बंध्याकरण को प्रोत्साहित कर रही है लेकिन आज भी आधुनिक गर्भनिरोधक अपनाने में पुरुषों का अनुपात एक प्रतिशत से भी कम है। यानि परिवार नियोजन का पूरा भार महिलाओं पर आ जाता है। इसलिए महिला बंध्याकरण ज़्यादा होता है। उत्तर प्रदेश में आधुनिक गर्भ निरोधक उपायों में महिला बंध्याकरण 55 प्रतिशत है।

एनएफएचएस-4 के आंकड़े बताते हैं कि लड़कियों की शिक्षा का प्रजनन दर से सीधा संबंध है। अशिक्षित महिलाएं औसतन 2.6 बच्चे चाहती हैं जबकि 12वीं तक पढ़ी महिलाएं 1.8 बच्चों को पर्याप्त मानती हैं। दूसरी ओर राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के 2017-18 के आंकड़ों के अनुसार महिला साक्षरता के मामले में उत्तर प्रदेश नीचे से पांचवें स्थान पर है।

राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग की पूर्व सदस्य रमी छाबड़ा का सुझाव है कि महिलाओं की शादी की न्यूनतम आयु 21 वर्ष और पुरुषों की 25 वर्ष कर दी जाए। देर से शादी और देर से बच्चा होने पर दो पीढ़ियों के बीच अंतर बढ़ेगा और आबादी स्थिर होगी। पिछली जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में 52 प्रतिशत लड़कियों की शादी 20 वर्ष से पहली हो गई।

विशेषज्ञ मानते हैं कि सरकारी अंकुश से जनसंख्या नियंत्रण में भारत में कारगर नहीं। यहां आपातकाल (1975-77) में पुरुष नसबंदी का काफी विरोध हुआ था। महिलाओं को शिक्षा और रोज़गार ही प्रजनन दर कम करने का सर्वश्रेष्ठ तरीक़ा हो सकता है। आर्थिक सम्पन्नता के साथ प्रजनन दर स्वत: कम हो जाती है।

मुतरेजा इन उपायों के अलावा महिलाओं को अधिकार सम्पन्न बनाने, परिवार नियोजन सुविधाओं तक लोगों की पहुंच बढ़ाने और दो बच्चों के बीच अंतर बढ़ाने की वकालत करती हैं। वे कहती हैं, हम बांग्लादेश और श्रीलंका जैसे पड़ोसी देशों से सीख सकते हैं जिन्होंने गर्भ निरोधकों के विकल्प बढ़ाकर और महिला शिक्षा पर ज़्यादा निवेश करके प्रजनन दर को कम किया है। भारत में भी केरल और तमिलनाडू में बिना किसी सख़्ती के प्रजनन दर में उल्लेखनीय गिरावट आई है। केरल में तो बालिका शिक्षा, रोज़गार के अवसर, महिला सशक्तीकरण और स्वास्थ्य सेवाएँ मज़बूत करके 1. 6 प्रजनन दर हासिल की है।

मुतरेजा के अनुसार दूसरे राज्यों के अनुभव बताते हैं कि महिलाओं पर ऐसी नीतियों का विपरीत प्रभाव पड़ा है। वरिष्ठ आइएएस निर्मला बुच के 2005 के अध्ययन के अनुसार स्थानीय निकाय चुनाव लड़ने की खातिर तीसरे बच्चे से इंकार करने के लिए पुरुषों ने अपनी पत्नियों को छोड़ दिया, अथवा बच्चा किसी और को गोद दे दिया। गर्भ में बेटी होने पर गर्भपात बढ़ गया। दो बच्चे की नीति से हरियाणा और पंजाब में पुरुषों की तुलना में महिलाओं का अनुपात बहुत कम हो गया। मुतरेजा बताती हैं, 'इसी का नतीजा है कि महिलाओं को दुल्हन के रूप में बेचा जाता है, यौन कर्मी बनने के लिए मजबूर किया जाता है, उनके साथ गुलामों जैसा बर्ताव होता है, मारपीट की जाती है और अंतत: उन्हें छोड़ दिया जाता है।'' 2017-18 के आर्थिक सर्वेक्षण में बताया गया है कि बेटे की चाहत वाले भारतीय समाज में 25 साल तक उम्र की 2.1 करोड़ अनचाही बेटियां हैं।❑❑

शेष.... हम इंतज़ार किए बिना...

को परेशान करने के लिए या हालात को बिगाड़ने के लिए है, उसे हम नहीं रोक पा रहे..?

उत्तर:- पिछले कुछ महीनों में ड्रोन देखे गए। कुछ ड्रोन बीएसएफ के लोगों ने मार गिराए, कुछ पकड़े गए जो खासकर से मादक पदार्थ और हथियार की तस्करी करते हैं। अभी जम्मू एयर बेस पर ड्रोन आया। इस स्थिति का सामलना करने में हमारे सुरक्षा बल काफी सक्षम हैं। जम्मू कश्मीर के लोगों को घबराने की जरूरत नहीं है। जहां जो भी है, उसको ठीक करना हमारी ज़िम्मेदारी है और बिना देरी उसको हम ठीक करेंगे।

प्रश्न:- क्या अफग़ानिस्तान में हो रहे बदलावों का यहां कोई असर आप पाते हैं..?

उत्तर:- मैंने पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि हम इंतज़ार नहीं करेंगे, जो होना चाहिए, करेंगे।

प्रश्न:-देश के औद्योगिक घराने जब तक निवेश नहीं करेंगे, तब तक रोज़गार और विकास नहीं बढ़ेगा। आप उसके लिए कुछ विशेष काम कर रहे है?

उत्तर:- एक हमारी न्यू इंडस्ट्रियल स्कीम आई है, जिसमें 28 हजार चार सौ करोड़ की 'इंसेंटिव' हम दे रहे हैं। शायद इस तरह की उद्योग नीति किसी राज्य के पास नहीं है। 300 प्रतिशत इंसेंटिव हम दे रहे हैं जीएसटी में। इसका मतलब यह हुआ कि जब आप मैन्युफैक्चरिंग करेंगे, तभी आपको इंसेटिव का लाभ मिलेगा। यहां के लोगों को भी लगता है कि 25 हजार करोड़ के आसपास का निवेश यहां आएगा, चार पांच लाख लोगों को रोज़गार मिलेगा।

प्रश्न:- जम्मू कश्मीर का कितना और कश्मीर क्षेत्र का कितना है? कितने लोग घाटी में आ रहे हैं..?

उत्तर:- घाटी में भी पर्याप्त लोग आ रहे हैं, और जम्मू में भी काफी लोग आ रहे हैं। हो। सकता है दस पांच प्रतिशत का अंतर हो, इससे ज़्यादा असंतुलन नहीं है।

प्रश्न:- कोरोना से लड़ाई आपने कैसे जीती? आपका जो टीकाकरण प्रतिशत है, शायद देश में सबसे अच्छा है?

उत्तर:- मौतें यहां भी हुई हैं, उनके प्रति गहरी संवेदना है और उन परिवारों की देखभाल के लिए हमने सक्षम नाम से योजना शुरू की है। प्रशासन का मानवीय चेहरा क्या होना चाहिए, इसे देखते हुए उन परिवारों की ज़िम्मेदारी हमने स्वयं ली है। एक दिन भी ऐसा नहीं आया कि हम किसी को कहें कि हमारे पास ऑक्सीजन बेड नहीं है। 45 आयुवर्ग से ऊपर के 98 प्रतिशत से ज़्यादा का टीकाकरण हमने कर दिया है।

प्रश्न:- ऐसे तीन काम बताइए, जिन पर आपको गर्व होता है?

उत्तर:- एक, लोकतंत्र की बहाली और पंचायती राज संस्था, आज़ादी के बाद पहली बार लागू करना। दूसरी, पूरी तरह पारदर्शी व्यवस्था और तीसरा, जवाबदेह प्रशासन। शांति, विकास और समृद्धि, ये तीन काम सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ पूरे कर रहे हैं।

प्रश्न:- ऐसे तीन काम जो प्राथमिकता के साथ करने हैं?

उत्तर:-प्राथमिकता के आधार पर उन्हें (कश्मीरी पंडितों) बसाना है। दूसरा, रोज़गार के अधिक से अधिक अवसर पैदा करने के लिए और तेज़ गति से काम करना है। तीसरा, यह सुनिश्चित करना है कि उद्योग की स्थापना यहां हक़ीक़त में बदल जाए और यहां के लोगों का जीवन बदले।

प्रश्न:- महिलाओं के लिए क्या खास योजना है, जिससे वे परंपरागत काम से बाहर नई दुनिया की रोशनी से रूबरू हो सकें?

उत्तर:- युवा और महिला फोकस में हैं कई स्कीम है, जैसे हौसला नाम से शुरू की है, तेजस्विनी नाम से शुरू की है। महिलाएं यहां पहले से ही काम करती रही हैं इतिहास में जाएंगे, तो कश्मीर में ही महिलाओं की पहली गोरिल्ला सेना बनी थी। यहां महिलाएं पहले ही सशक्त हैं उनको हम बढ़ावा दे रहे हैं यहां बहनें बहुत प्रतिभावान हैं और आगे आ रही हैं।❑❑

SHANTI MISSION (HINDI WEEKLY) NEW DELHI Postal Registration No. DL(C)-01/1266/2021-23
Publishing Date : 01Aug. 2021 Posting Days : MON. - TUE. at N.D.P.S.O. New Delhi-110002 R.N.I. 57270/93

मंज़र पस-मंज़र — मीम.सीन.जीम

•कर्नाटक-येदियुरप्पा का जाना•भीख की मजबूरी

कर्नाटक - येदियुरप्पा का जाना

दक्षिण भारत में एकमात्र भाजपा शासित राज्य कर्नाटक के चार बार मुख्यमंत्री बी.एस. येदियुरप्पा का शुरू से ही विवादों से नाता रहा तथा अतीत में अन्य बातों के अलावा उन पर भ्रष्टाचार के आरोप भी लगते रहे हैं। 2008 के चुनावों में कर्नाटक में येदियुरप्पा के नेतृत्व में पहली बार भाजपा सरकार बनाने के लिए 05 विधायकों का इतंज़ाम करके उन्हें सरकार बनाने में सहयोग देने वाले 'बेल्लारी' के उत्खनन (Excavation) कारोबारी तथा राजनीतिज्ञ रेड्डी बंधुओं से उनकी निकटता के कारण भी विवाद पैदा हुए। इन्हीं रेड्डी बंधुओं ने अवैध रूप से लौह अयस्क देश से बाहर भेजकर सरकार को लगभग 3500 करोड़ का नुकसान पहुंचाया था। इन्हीं के दबाव के कारण येदियुरप्पा को 2009 में अपनी ही सरकार से अपनी पसंद के अफसरों तथा अपनी भरोसेमंद अकेली मंत्री शोभा करंदलजे को मंत्री पद से हटाना पड़ा था जो अब केन्द्र में मंत्री हैं।

समय की आवश्यकता के अनुसार येदियुरप्पा के स्थान पर भाजपा नेतृत्व ने तुलनात्मक दृष्टि से येवा नेता को कर्नाटक की बागडोर सौंपी है। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि वह प्रदेश की जनता को कैसा शासन प्रदान करते हैं और आंध प्रदेश व अन्य राज्यों के साथ जारी गोदावरी जल विवाद तथा महाराष्ट्र के साथ चल रहे सीमा विवाद आदि समस्याओं को किस प्रकार सुलझाते हैं।

कुछ माह से येदियुरप्पा के सांसद बेटे बी.वाई. विजयेन्द्र द्वारा राज्य सरकार के कामकाज में कथित अनुचित हस्तक्षेप के लग रहे आरोपों के चलते वहां की राजनीति अत्याधिक गर्माई हुई थी। पार्टी के असंतुष्ट नेताओं के अनुसार विजयेन्द्र स्वयं को सुपर सी.एम. की तरह पेश करने लगे थे और उन पर सत्ता के दुरुपयोग तथा भ्रष्टाचार के आरोप भी लगने लगे थे। इससे येदियुरप्पा के लिए मुश्किल पैदा हो गई थी। हालांकि कुछ ही दिन पूर्व भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने कहा था कि येदियुरप्पा अच्छा काम कर रहे हैं परंतु अचानक 25 जुलाई को येदियुरप्पा ने त्यागपत्र देने का संकेत देने के बाद 26 जुलाई को त्यागपत्र दे दिया।

27 जुलाई को पार्टी के विधायक दल की बैठक में राज्य के गृह, क़ानून और संसदीय कार्य मंत्री बसावराज बोम्मई को विधायक दल का नेता चुन लिया गया जिन्होंने बीती 28 जुलाई को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिला दी गई। विधायक दल की बैठक में 'बोम्मई' के नाम पर प्रस्ताव स्वयं येदियुरप्पा ने पेश किया जिस पर सभी ने सर्वसम्मति की मुहर लगा दी। हालांकि इससे पहले पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व ने अनेक नामों नामों पर विचार किया था जिसमें आर.एस.एस. तथा भाजपा के वफादार के रूप में मशहूर 06 बार विधायक रहे और अनुसूचित जाति समुदाय से संबंधित एस. अंगारा और उपमुख्यमंत्री गोविंद करजोल के नाम सबसे आगे थे, परंतु अन्तिम समय पर बैठक में 'बोम्मई' के अलावा कोई अन्य नाम पेश नहीं किया गया।

नए मुख्यमंत्री के चुनाव से पहले ही येदियुरप्पा के बेटे एवं सांसद बी. वाई. विजयेंद्र ने कह दिया था कि पार्टी द्वारा नए मुख्यमंत्री का चुनाव हैरान करने वाला होगा। कहने को तो येदियुरप्पा (78) ने भाजपा के 75 वर्ष की आयु के मापदंड के चलते त्यागपत्र दिया परंतु पार्टी नेतृत्व ने उनके त्यागपत्र के बाद राज्य में भाजपा की नई टीम गठित करने के लिए तुलनात्मक दृष्टि से कम आयु के बसावराज बोम्मई (61) को मुख्यमंत्री बनाया है। येदियुरप्पा के सबसे करीबी और विश्वासपात्र होने के कारण 'बोम्मई' को चुना गया है क्योंकि इस कारण येदियुरप्पा का पसंदीदा उम्मीदवार न चुनना अगले चुनावों में भाजपा के लिए महंगा पड़ सकता है।

येदियुरप्पा की भांति ही 'बोम्मई' के भी 'लिंगायत' समुदाय से संबंधित होने के कारण 'लिंगायत' समुदाय में इस बदलाव से नाराज़गी भी पैदा नहीं होगी। येदियुरप्पा के अलावा भाजपा के केन्द्रीय नेताओं से निकटता भी उनके चयन के मुख्य कारणों में से एक बताया जा रहा है। कुल मिलाकर केन्द्रीय भाजपा नेतृत्व ने येदियुरप्पा के स्थान पर 'बोम्मई' की नियुक्ति करने का कदम सोच समझ कर ही उठाया होगा परंतु येदियुरप्पा के स्थान पर उन्हीं की सिफारिश पर नियुक्त किए गए 'बोम्मई' उनकी छाया से निकल कर स्वतंत्र रूप से काम कर पाते हैं या नहीं इसका जवाब तो भविष्य ही मिलेगा। समय की आवश्यकता के अनुसार येदियुरप्पा के स्थान पर भाजपा नेतृत्व ने तुलनात्मक दृष्टि से येवा नेता को कर्नाटक की बागडोर सौंपी है। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि वह प्रदेश की जनता को कैसा शासन प्रदान करते हैं और आंध्र प्रदेश व अन्य राज्यों के साथ जारी गोदावरी जल विवाद तथा महाराष्ट्र के साथ चल रहे सीमा विवाद आदि समस्याओं को किस प्रकार सुलझाते हैं।

भीख की मजबूरी

भीख मांगने वालों के प्रति जिस श्रेष्ठ संवेदना का प्रदर्शन देश की सर्वोच्च अदालत ने किया है, वह न केवल स्वागत योग्य है, बल्कि अनुकरणीय भी है। अदालत ने दोटूक कह दिया कि वह सड़कों से भिखारियों को हटाने के मुद्दे पर एलीट या संभ्रांत वर्ग का नज़रिया नहीं अपनाएगी, क्योंकि भीख मांगना एक सामाजिक और आर्थिक समस्या है। न्यायमूर्ति डी.वाई चन्द्रचूड़ और न्यायमूर्ति एम. आर. शाह की बैंच ने कहा कि वह सड़कों और सार्वजनिक स्थलों से भिखारियों को हटाने का आदेश नहीं दे सकती, क्योंकि शिक्षा और रोज़गार की कमी के चलते बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ही लोग आमतौर पर भीख मांगने को मजबूर हो जाते हैं। अदालत का इशारा साफ था कि भीख मांगने पर प्रतिबंध लगाना ठीक नहीं होगा और इससे भीख मांगने की समस्या का समाधान नहीं होगा। याचिकाकर्ता को शायद उम्मीद थी कि सर्वोच्च न्यायालय सड़कों चौराहों पर लोगों को भीख मांगने से रोकने के लिए कोई आदेश या निर्देश देगी। अदालत ने समस्या की व्याख्या जिस संवेदना के साथ की है, वह ग़रीबी हटाने की दिशा में आगे के फैसलों के लिए बहुत ग़ौरतलब है। अदालत ने पूछा कि आख़िर लोग भीख क्यों मांगते हैं? गरीबी के कारण ही यह स्थिति बनती है।

यह सोचने में बहुत अच्छा लगता है कि सड़कों पर कोई भिखारी न दिखे, लेकिन सड़कों से भिखारियों को हटाने से क्या ग़रीबी दूर हो जाएगी? क्या जो लाचार हैं, जिनके पास आय का कोई साधन नहीं, क्या उन्हें मरने के लिए छोड़ दिया जाएगा? जस्टिस चन्द्रचूड़ ने याचिकाकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ वकील चिन्मय शर्मा से यह भी कहा कि कोई भीख नहीं मांगना चाहता। मतलब, सरकार को भीख मांगने की समस्या से अलग ढंग से निपटना होगा। इसमें कोई शक नहीं कि सरकार असंख्य भारतीयों तक पहुंच ही नहीं पा रही है। मुख्यधारा से छिटके हुए वंचित लोग भीख मांगने को विवश हैं। ऐसे लोगों तक जल्दी सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचना चाहिए। जहां तक चौराहों पर भीख की समस्या है, तो स्थानीय प्रशासन इस मामले में क़दम उठा सकता है। सड़क पर भीख मांगने वालों को सचेत किया जा सकता है कि वे किसी सुरक्षित जगह पर जाकर भीख मांगने जैसा कृत्य करें। भीख मांगना अगर सामाजिक समस्या है, तो समाज को भी अपने स्तर पर इस समस्या का समाधान करना चाहिए।

यह सोचने में बहुत अच्छा लगता है कि सड़कों पर कोई भिखारी न दिखे, लेकिन सड़कों से भिखारियों को हटाने से क्या ग़रीबी दूर हो जाएगी? क्या जो लाचार हैं, जिनके पास आय का कोई साधन नहीं, क्या उन्हें मरने के लिए छोड़ दिया जाएगा? जस्टिस चन्द्रचूड़ ने याचिकाकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ वकील चिन्मय शर्मा से यह भी कहा कि कोई भीख नहीं मांगना चाहता। मतलब, सरकार को भीख मांगने की समस्या से अलग ढंग से निपटना होगा।

समाज के आर्थिक रूप से सम्पन्न और सक्षम लोगों को स्थानीय स्तर पर सरकार के साथ मिलकर भीख जैसी मजबूरी का अंत करना चाहिए।

बहरहाल, उच्चतम न्यायालय ने कोविड-19 महामारी के मद्देनज़र भिखारियों और बेघर लोगों के पुनर्वास और टीकाकरण का आग्रह करने वाली याचिका पर केन्द्र और दिल्ली सरकार को नोटिस जारी करके उचित ही जवाब मांगा है। याचिका की प्रशंसा की जानी चाहिए कि उसमें महामारी के बीच भिखारियों और बेघर लोगों के पुनर्वास, उनके टीकाकरण, आश्रय व भोजन उपलब्ध

बाक़ी पेज 11 पर

चीन : ज़्यादा बच्चे पैदा करने पर कैश सब्सिडी

चीन अपने देश की आबादी को बढ़ाने के लिए संघर्ष कर रहा है, क्योंकि वहां आबादी का एक वर्ग तेज़ी से बूढ़ा हो रहा है। ऐसे में चीनी सिचुआन के दक्षिण पश्चिम प्रांत में पंजिहुआ शहर की सरकार ने घोषणा की है कि वह दूसरे और तीसरे बच्चे के पैदा होने पर स्थानीय परिवारों को हर माह 500 युआन (5748 रुपए) प्रति बच्चा देगी। यह राशि बच्चे के तीन वर्ष का होने तक मिलेगी। इस्पात उद्योग के लिए जाने जाने वाले 1.2 मिलियन (12 लाख) लोगों का यह शहर स्थानीय घरेलू रजिस्ट्रेशन वाली माताओं को मुफ्त प्रसव सेवाएं प्रदान करेगा और कार्यस्थलों के पास अधिक नर्सरी स्कूल स्थापित करेगा। इतना ही नहीं शहर योग्य शीर्ष शोधकर्ताओं, शिक्षकों, चिकित्सा पेशेवरों और उद्यमियों को नक़द बोनस भी देगा, जो वहां बसने का फैसला करते हैं। बता दें, मई में सभी विवाहित जोड़ों को तीन बच्चे पैदा करने की अनुमति देने के निर्णय के बाद, चीनी सरकार ने 2025 तक बच्चे के जन्म, पालन-पोषण और शिक्षा की लागत में मदद करने का वादा किया है। ब्लूमबर्ग के अनुमान के अनुसार, यह इस संभावना की ओर इशारा करता है कि देश की जनसंख्या वर्तमान में 1.41 बिलियन, 2025 से पहले घटने लगेगी। आबादी के मामले में चीन दुनिया में पहले नंबर पर है। बढ़ती जनसंख्या पर रोक लगाने के लिए कुछ साल पहले यहां सख़्त कानून लागू किए गए थे जिसके बाद वहां प्रजनन दर में बेहद कमी आई। इसमें सुधार के लिए अब चीनी सरकार जनता प्रोत्साहित कर रही है।

ज़रूरी ऐलान

आपकी ख़रीदारी अवधि पते की चिट पर अंकित है। अवधि की समाप्ति से पूर्व रक़म भेजने की कृपा करें।

रक़म भेजने के तरीक़े:-

❶ मनीआर्डर द्वारा ❷ Paytm या PhonePe द्वारा 9811198820 पर
SHANTI MISSION
❸ऑनलाइन हेतु बैंक खाते का विवरण
SBI A/c 10310541455
Branch: Indraprastha Estate
IFS Code: SBIN0001187

अपने प्रिय अख़बार साप्ताहिक शांति मिशन को इंटरनेट पर देखने के लिये लॉगऑन करें:
www.aljamiat.in —— www.jahazimedia.com
Mob. 9811198820 — E-mail: Shantimissionweekly@gmail.com

ख़रीदारी चन्दा

वार्षिक	Rs.130/-
6 महीने के लिए	Rs.70/-
एक प्रति	Rs.3/-

जानकारी के लिये सम्पर्क करें
साप्ताहिक
शांति मिशन
1, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23311455